Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

अविवेक
समझ पड्यां बिण सरधा परूपे,
पीपल बांधी मूर्ख ज्यूं ताणें।।

समझे बिना जो सिद्धांत की प्ररुपणा करता है वह उस मूर्ख के समान है जो पीपल को रस्से से बांध घर ले जाना चाहता है।
– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 15 • 13 जनवरी- 19 जनवरी, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-01-2025 • पेज 12 ₹ 10 रुपये

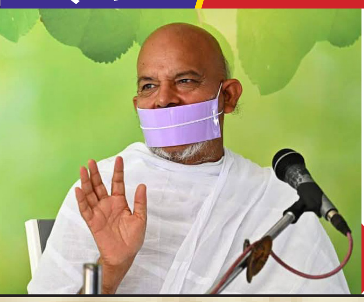

वृद्धावस्था में भी रहे समता और समाधि : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 02

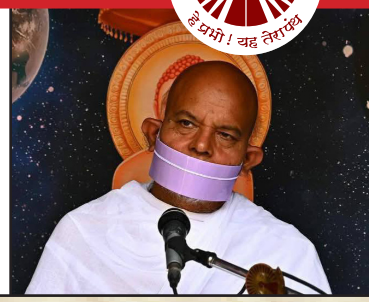

आवेश युक्त गुस्सा है निंदनीय और त्याज्य : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 11

Address Here

समय को दें गले के हार सा महत्त्व : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर ने दी सन् 2025 में पच्चीस बोल कंठस्थ करने और समझने की प्रेरणा

डोलिया।
01 जनवरी, 2025

ईसवी सन् 2025 का शुभारंभ। सौराष्ट्र की यात्रा में गतिमान नव निधि के प्रदाता आचार्य श्री महाश्रमणजी सायला से लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर डोलिया जैन तीर्थ में पधारे। अपने आराध्य से ईसवी सन् 2025 हेतु मंगल पाथेय और ऊर्जा ग्रहण करने भारत वर्ष के अनेकों क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाएं श्रीचरणों में उपस्थित हुए।

नववर्ष के अवसर पर मंगलमूर्ति, मंगलप्रदाता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने महत्ती कृपा करते हुए पूर्व निर्धारित समयानुसार, प्रातः 11:21 बजे वृहद मंगल पाठ की कृपा प्रदान की। मंगल देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि हमें समय का मूल्यांकन करना चाहिए, क्योंकि समय बहुत मूल्यवान है। समय आता है और चला जाता है। भविष्य वर्तमान में बदलता है और वर्तमान अतीत में समाहित हो जाता है।

आज नववर्ष 2025 का आगमन हो चुका है, और 2024 अतीत बन गया है। अतीत और आगत अनंत हैं, लेकिन वर्तमान क्षणिक है। अब हम 2025 में जी रहे हैं। वर्ष के पहले दिन का पहला सूर्योदय हो चुका है। हमें समय का सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। समय अमूल्य धन है, जो सभी को समान रूप से मिलता है। इसे गले का हार बनाकर महत्व दें, तभी इसका उपयोग सार्थक हो सकता है।

हमारे मन, वचन और काय की प्रवृत्ति शुभ योग में हो। समय से पहले तैयारी करें और योजना बनाकर कार्य करें। चिंतनयुक्त निर्णय लें और उसे क्रियान्वित करें। भाग्य के भरोसे न बैठें। भाग्य ज्ञातव्य भी है और परिवर्तनशील भी। कर्मों का संक्रमण हो सकता है। हमें पुरुषार्थ पर अधिक ध्यान देना चाहिए। पुरुषार्थ करने पर यदि सफलता न भी मिले तो दुःखी न हों। पुरुषार्थ का फल आज नहीं तो कल अवश्य मिलता है। तत्वबोध कर लेना भी श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। छः द्रव्यों और नव तत्वों का अध्ययन करें। जीवन में कठिनाई आए तो समता और शांति में रहें। प्रतिकूलता या अनुकूलता में समता का अभ्यास करें। समस्या आने पर उसका समाधान करने का प्रयास करें, उत्तेजना और आक्रोश में न आएं।

सन् 2025 में हमें पुरुषार्थमय जीवन जीना चाहिए। भगवान महावीर ने साधना के लिए अद्भुत पुरुषार्थ किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त हुआ और मोक्ष की प्राप्ति हुई। आचार्य भिक्षु ने भी जीवन में कठोर पुरुषार्थ किया, जिसके फलस्वरूप तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना हुई। गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कितनी ही यात्राएं कीं। उनका हर कदम पुरुषार्थ का प्रतीक था। सम्यक् पुरुषार्थ कभी न कभी अवश्य फलदायी होता है।

(शेष पेज 10 पर)

सन् 2025 के लिए पूज्य प्रवर की प्रेरणा

"सन् 2025 को सम्यक् पुरुषार्थ से सफलतम बनाने का प्रयास करें। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को नववर्ष पर अपने मन से कोई आध्यात्मिक संकल्प लेना चाहिए। आप 'पच्चीस बोल' को कंठस्थ करें और उनके अर्थ को समझने का प्रयास करें। इसके लिए आचार्य महाप्रज्ञजी की पुस्तक 'जीव-अजीव' का स्वाध्याय उपयोगी हो सकता है। इसके साथ ही, प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के तहत प्रतिदिन कुछ समय प्रेक्षाध्यान करने का संकल्प लें।"

जीवन में सुविनीतता का होना है आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

कुचियादर
05 जनवरी, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी कुचियादर में स्थित स्वामी विवेकानंद इंस्टिट्यूट परिसर में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए मंगल पुरुष ने फरमाया कि व्यक्ति कभी घमंड करता है, कभी आडम्बर करता है और कभी किसी चित्त वृत्ति से प्रभावित हो जाता है। अभिमान को मदिरा पान के समान बताया गया है। व्यक्ति को घमण्ड अथवा अभिमान से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी अपने जीवन में सुविनीत बनने का प्रयास करे। जो आदमी गुस्सैल होता है, वाचाल होता है, अनावश्यक बोलता है, उसे तो कोई भी अपने यहां से निकाल सकता है और जो सुविनीत, विनम्रता रखने वाला है, उसे आदर और सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। कुछ ज्ञान हो जाए और आदमी उसका घमण्ड कर ले तो वह बुरी बात हो सकती है। सामान्य आदमी के जीवन में अज्ञान का अंधकार होता भी है। यदि घमंड उग्र रूप ले ले, तो व्यक्ति और अधिक दुःखी हो जाता है। जो आत्मा अविनीत होती है, चाहे वह पशु, मानव या देवता हो, वह दुःखी रहती है। सुविनीत आत्मा सुखी रहती है। हमारे जीवन में सुविनीतता का होना आवश्यक है। विनय और अविनय का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

आज स्वामी विवेकानंद से जुड़े विद्या संस्थान में आना हुआ है। विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ विनय का भी संस्कार प्राप्त करना चाहिए। विद्या विनय से ही शोभा पाती है। जब विनय के साथ विवेक जुड़ता है, तो व्यक्ति को आनंद की प्राप्ति हो सकती है। जब तक भीतर में ज्ञानावरणीय कर्म का आवरण है, तब तक ज्ञान के साथ अज्ञान भी बना रहता है।

(शेष पेज 10 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 जनवरी - 19 जनवरी, 2025

सरलता और ऋजुता है जीवन का श्रृंगार : आचार्यश्री महाश्रमण

बोरियानस।
04 जनवरी, 2025

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण चोटिला से लगभग नौ किलोमीटर का विहार कर बोरियानस (मोटी मोरडी) में स्थित श्री महावीरपुरम् तीर्थ में पधारे। महावीर के प्रतिनिधि ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धार्मिक साहित्य में निर्वाण, मोक्ष, और परिनिर्वाण की बातें आती हैं। प्रश्न है कि निर्वाण को कौन सा जीव प्राप्त कर सकता है? जन्म-मरण और आठों कर्मों से पूर्ण मुक्तता ही निर्वाण की अवस्था होती है। यह इतनी ऊंची अवस्था है कि वहां पहुंचने के बाद न शरीर रहता है, न वाणी, न मन, न राग-द्वेष। यह शुद्ध, बुद्ध, और विशुद्ध परमात्मा की अवस्था होती है। सिद्धांत की मान्यता के अनुसार, मनुष्य के सिवाय कोई भी जीव सीधे निर्वाण को प्राप्त नहीं कर सकता। मनुष्यों में भी असंज्ञी मनुष्य मोक्ष में नहीं जा सकते। संज्ञी मनुष्यों में भी वर्तमान समय में इस भरत क्षेत्र से कोई मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता। संज्ञी मनुष्यों में भी केवल भव्य जीव ही मोक्ष जा सकते हैं। भले ही वे साधु या आचार्य बन जाएं, परंतु अभव्य जीव मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते। मोहनीय कर्म का क्षीण किए बिना केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त नहीं होते। बारहवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म क्षीण होता है, उसके बाद तेरहवें गुणस्थान में केवलज्ञान और केवलदर्शन की प्राप्ति होती है।

महावीरपुरम् में सहज भगवान महावीर का स्मरण करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि भगवान महावीर ने असाधारण साधना की थी और पूर्व भवों में भी निरंतर साधना की थी। उन्होंने घाती कर्मों का क्षय कर तीर्थंकर पद को प्राप्त किया। अपनी देशना के माध्यम से जनकल्याण किया और अंततः पावापुरी में निर्वाण को प्राप्त किया। उच्च कोटि की धर्म साधना करने वाले, शुद्ध चित्त व शुद्ध भावधारा वाले व्यक्ति ही निर्वाण को प्राप्त कर सकते हैं। जिनका हृदय सरल और शुद्ध होता है, उनके भीतर धर्म ठहरता है। शुद्धता और ऋजुता का गहरा संबंध है। प्रायश्चित लेने वाले में ऋजुता होनी चाहिए, और प्रायश्चित देने वाले में निष्पक्षता और गंभीरता का भाव होना चाहिए। ऋजुता से विशुद्धि प्राप्त होती है। हमारे जीवन में आर्जव का भाव होना चाहिए। ऋजुता जीवन की संपत्ति है। वह व्यक्ति धन्य है, जो झूठ और कपट से बचकर साधना करता है। सत्य एक महान तप है। जिसके हृदय में सत्य होता है, वहां प्रभु का निवास होता है।

सरलता जीवन का श्रृंगार है। सच्चाई और सरलता का अद्वितीय संगम है। दिगंबर हो या श्वेतांबर, कई सिद्धांत भले अलग हों, लेकिन महावीर को सभी मानते हैं। वे चारों संघों के परम पिता हैं। हमारी यात्रा साधुता से सिद्धता की ओर है।

पूज्यवर के स्वागत में श्री महावीरपुरम तीर्थ के ट्रस्टी ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

श्री महावीरपुरम् तीर्थ में पधारे महावीर के प्रतिनिधि

वृद्धावस्था में भी रहे समता और समाधि : आचार्यश्री महाश्रमण

मघरीखाडा।
02 जनवरी, 2025

क्षमामूर्ति आचार्यश्री महाश्रमणजी मघरीखाड़ा स्थित स्थित युग शक्ति वृद्धाश्रम में पधारे। मंगल प्रेरणा और पाथेय प्रदान करते हुए युगदृष्टा ने फरमाया कि दस धर्मों में उत्तम क्षमा धर्म एक महान धर्म है। सहन करना, सहिष्णुता रखना, मन, वचन और काया के प्रति प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना और समता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। परिवार में, व्यापार में, समाज में और व्यवहार में सहिष्णुता हो, तो शांति बनी रह सकती है। सहिष्णुता के अभाव में व्यक्ति आर्त्त ध्यान में जा सकता है।

आचार्यश्री ने चार आश्रमों के संदर्भ में कहा कि 75 वर्ष के बाद का समय संन्यास आश्रम का माना गया है। इस समय व्यक्ति को निवृत्ति और धार्मिक साधना की ओर बढ़ना चाहिए। वृद्धाश्रम में भी वृद्धजन संन्यास की साधना करें। स्वाध्याय, ध्यान, जप, अनुप्रेक्षा आदि धर्म प्रवृत्तियों में मन लगाएं। संसार से निवृत्ति का भाव रखें।

मानव जीवन को दुर्लभ बताया गया है, जो हमें प्राप्त हुआ है। वृद्धत्व लंबी आयु से मिलता है, और यह भाग्यशाली व्यक्ति को ही प्राप्त होता है। इस अवस्था में भी नवकार मंत्र का जप निरंतर चलते रहना चाहिए।

वृद्धावस्था में धर्म की प्रवृत्ति करने से आत्मा का कल्याण संभव है। आत्मा की ओर अधिक ध्यान केंद्रित करें। लेटे-लेटे भी ंणमो सिद्धाणंृ का जाप करते रहें। यह भावना रखें कि मुझे सिद्धि प्राप्त हो, जन्म-मरण से मुक्ति मिले और मैं निरामय बनूं। यदि शुद्धता और वीतरागता आ जाए, तो सिद्धि अवश्य मिलेगी। वृद्धावस्था में समता का भाव और समाधि बनी रहे। छोटे-छोटे त्याग करते रहें और अधिक से अधिक समय साधना में लगाएं। आचार्यश्री ने कहा कि अपनी समता स्वयं को शांति प्रदान करने वाली है। यदि वृद्ध व्यक्ति की बात कोई नहीं सुनता, तो इसे लेकर दुःखी न हों। अपने सुख में रहना सीखें। यदि कोई आपकी बात मानता है, तो अच्छा है, और यदि नहीं मानता, तो भी कोई समस्या नहीं है। वृद्धाश्रम धर्म का आश्रम होता है। वृद्धजनों में शांति और समाधि बनी रहे।

मंगल प्रवचन के उपरान्त वृद्धाश्रम से संबंधित अल्पेशभाई मोदी ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संतोष को अपनाकर करें इच्छाओं का परिमार्जन : आचार्यश्री महाश्रमण

चोटिला।
03 जनवरी, 2025

अध्यात्म शक्ति के पुरोधा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ मघरीखाडा से मंगल प्रस्थान कर चोटिला स्थित जलाराम मंदिर परिसर में पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए शक्तिपुंज ने फरमाया कि आदमी के मन में लोभ नाम की वृत्ति या लोभ नाम का कषाय दशम गुणस्थान तक विद्यमान रहता है। भले ही वह वहां कमजोर अवस्था में हो, परंतु वहां भी लोभ का अस्तित्व बना रहता है। जब लोभ उभरता है, तो आदमी विविध अपराधों में प्रवृत्त हो सकता है। वह हिंसा-हत्या जैसे कृत्यों में जा सकता है और मृषावाद जैसे अनेक कार्य लोभ के प्रभाव से कर सकता है। गृहस्थ जीवन में परिग्रह भी होता है, अर्थार्जन के प्रयास में आदमी कई बार अशुद्ध साधनों का सहारा ले सकता है। गृहस्थ के लिए धन एक महत्वपूर्ण आयाम है, तो धर्म भी एक महत्वपूर्ण आयाम है।

गुरुदेव श्री तुलसी ने अणुव्रत की बात बताई। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से आदमी का जीवन बेहतर बन सकता है। हर धर्म को मानने वाला अणुव्रत को अपना सकता है। अणुव्रत आदमी के घर में रहे, बाजार में रहे, विद्यालयों में, चिकित्सालयों में रहे अर्थात् आदमी के जीवन में रहे। जीवन में नैतिकता, अहिंसा और संयम का समावेश होना चाहिए। लोभ एक ऐसा तत्व है, जो व्यक्ति को अपराध और असंयम की ओर प्रेरित कर सकता है।

कार्य में कारण भले ही परोक्ष हो, परंतु वही कार्य को जन्म देता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी प्रियता और अप्रियता की संवेदना से मुक्त प्रेक्षाध्यान का अभ्यास कराते थे, ताकि व्यक्ति राग-द्वेष से मुक्त रह सके। ध्यान के माध्यम से हम अपनी भीतरी यात्रा कर सकते हैं और वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास कर सकते हैं। लोभी को यदि कोई सोने-चांदी का पर्वत भी दे दे तो भी उसका लोभ समाप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि इच्छाएं आकाश के समान अनंत होती है। संतोष को अपनाकर इच्छाओं का परिमार्जन करें, भोग और उपभोग का नियंत्रण करें, ताकि लोभ कम हो सके। साधु को भोजन मिले तो ठीक है, न मिले तो भी ठीक है। भोजन मिलने से शरीर को पोषण मिलता है, और न मिलने पर तपस्या को पोषण मिलता है। साधु दोनों ही स्थितियों में संतोष रखते हैं।

जो व्यक्ति संतोष में रहता है, वह पूजनीय होता है। असंतोष में रहने वाले मूढ़ होते हैं। विद्वान लोग संतोष को धारण करते हैं। असंतोष का कोई अंत नहीं है। इसलिए, संतोष ही परम सुख है। संतोष के सामने सभी धन धूल के समान हैं। हमें प्रयास करना चाहिए कि संतोष का धन हमारे पास रहे। जलाराम मंदिर के ट्रस्टी व महामंत्री दामजी भाई राठौड़ ने तथा जैन समाज की ओर से पारसभाई ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

आवेश युक्त गुस्सा है निंदनीय और त्याज्य : आचार्यश्री महाश्रमण

वस्तड़ी।
30 दिसम्बर, 2024

जिनशासन के सजग प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ सौराष्ट्र क्षेत्र के वस्तड़ी ग्राम के प्राथमिक शाला में पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए युग प्रणेता ने फरमाया कि मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं। कभी वह शांति में रहता है, तो कभी गुस्से में भी आ जाता है। गुस्सा एक दुर्वृत्ति है। गुस्से के स्तर में अंतर हो सकता है। कई बार हित के लिए कठोर शब्दों का उपयोग किया जा सकता है। चेहरे के भाव भी बदल सकते हैं। यह एक सात्विक वृत्ति का गुस्सा हो सकता है।

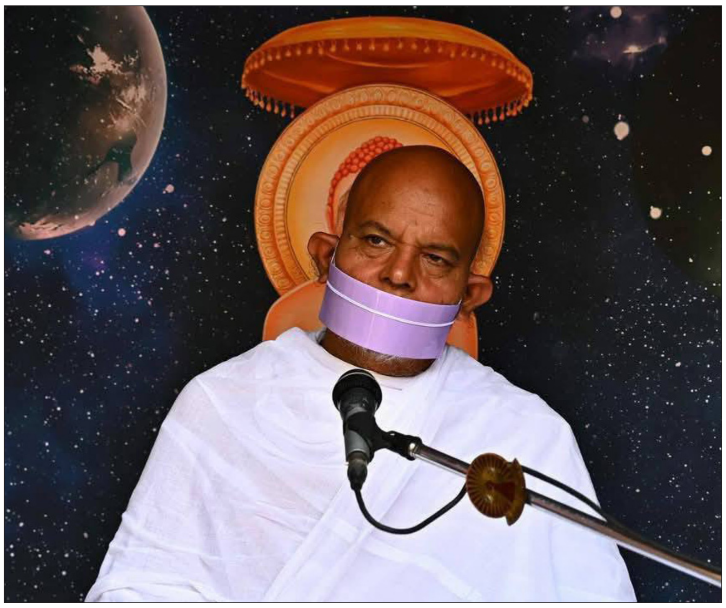

कभी-कभी, जब कोई गलत बोल देता है, तो मन में गुस्सा आ सकता है, परंतु यदि उसे शब्दों और चेहरे पर प्रकट नहीं किया जाता, तो यह दूसरे प्रकार का गुस्सा है। तीसरे प्रकार का गुस्सा वह होता है, जब किसी ने अपशब्द बोले और सामने वाला भी गुस्से में लाल-पीला हो जाता है। वह हाथ में कुछ हो तो उसे फेंकने लगता है और अपशब्द बोलने लगता है। यह गुस्सा अत्यंत नुकसानदायक हो सकता है।

जिस गुस्से में आवेश आता है, वह गुस्सा न केवल सर्वथा निंदनीय और त्याज्य है, बल्कि व्यवहार में भी अस्वीकार्य है। दूसरे प्रकार के गुस्से में यदि गुस्सा आ गया तो यह भी एक दुर्बलता है। पहले प्रकार के गुस्से में यदि शिक्षक बच्चों को डांटता है, तो उसका उद्देश्य उन्हें सुधारना होता है, न कि पीड़ा देना।

गुस्सा मनुष्य का शत्रु होता है। साधु तो गुस्से से मुक्त और महान प्रसन्नता वाले होते हैं। संत वह होता है, जो शांत रहता है। अनावश्यक झगड़े से बचना चाहिए। किसी को बदनाम करने की भावना नहीं रखनी चाहिए। उचित स्थान और समय पर गलती बताई जा सकती है ताकि उसकी पुनरावृत्ति न हो।

विद्यालय एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, जहां ज्ञान के साथ-साथ अच्छे संस्कारों का भी आदान-प्रदान होता है। शिक्षक का दायित्व है कि वह बच्चों को अच्छा ज्ञान दे और उनकी सही देखभाल करे। बाल पीढ़ी का उन्नयन शिक्षक की जिम्मेदारी है। शिक्षक मिट्टी को घड़े का आकार देने वाले कुम्हार की तरह होता है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने समुपस्थित विद्यार्थियों को प्रश्नों के माध्यम से जीवन में अच्छा काम करने की प्रेरणा प्रदान की। प्राथमिकशाला के शिक्षक नरेशभाई सोलंकी, ग्राम पंचायत सरपंच घनश्याम सिंह गोहिल ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। बैंगलोर ज्ञानशाला की कन्याओं और किशोरों ने पृथक्-पृथक् गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

उड़ान कार्यशाला का आयोजन

गुवाहाटी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत उड़ान सुनहरा भविष्य एक कदम स्वालंबन की ओर बेकिंग क्लास कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत से हुई।

तत्पश्चात भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर आध्यात्मिक अनुष्ठान में सामूहिक जप किया गया। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस बेकिंग क्लास से प्राप्त प्रशिक्षण कन्याओं और बहनों को उनके सुनहरे भविष्य की ओर ले जाने में सहायक बनेगा। इसमें लगभग 50 बहनों की सहभागिता रही। बेकिंग क्लास में मनीषा दूधोड़िया ने केक बनाने का प्रशिक्षण दिया। सभी बहनों ने उत्साह से कार्यशाला में अपनी सहभागिता प्रदान की। कार्यक्रम संयोजिका राजश्री दुगड़ एवं मीनू दूधोड़िया व सभी बहनों के अथक प्रयास से कार्यशाला सफल रही। उपाध्यक्ष सुनीता गुजरानी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सीपीएस की चार बैच का हुआ दीक्षांत समारोह

अहमदाबाद।

अखिल तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के इतिहास में प्रथम बार एक साथ चार-चार बैच का दीक्षांत समारोह का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद द्वारा किया गया।

सीपीएस दीक्षांत समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं सीपीएस के मुख्य राष्ट्रीय प्रशिक्षक अरविंद मांडोत की उपस्थिति में तेरापंथ भवन, पश्चिम नवरंगपुरा अहमदाबाद हुआ।

तेयुप अध्यक्ष पंकज घीया ने सीपीएस की चार बैच को महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया और कहा सीपीएस ऐसा आयाम है जिसके कारण अधिक से अधिक परिवार तेयुप से जुड़ रहे हैं। मुख्य अतिथि और मुख्य राष्ट्रीय प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने संभागियों और प्रशिक्षकों की सराहना करते हुए सीपीएस को जीवन में उपयोगी बताया तथा भविष्य में जोनल ट्रेनर बनने को प्रेरणा दी। विशिष्ट अतिथि अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया और सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने तेयुप की गतिविधियों की सराहना करते हुए चार बैच के कीर्तिमान के लिए बधाई दी।

कार्यक्रम में उपरोक्त वक्ताओं के अतिरिक्त तेयुप मंत्री जय छाजेड़, सीपीएस राष्ट्रीय प्रशिक्षक महावीर भटेवरा, भव्य बोथरा, अहमदाबाद अभातेयुप परिवार, तेयुप पदाधिकारी गण एवं सभी संभागियों की अपने-अपने परिवारजन के साथ एवं टीम सीपीएस की उपस्थिति रही।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का दीक्षांत समारोह आयोजित

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का आयोजन अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विजय स्वर संगम द्वारा विजय गीत के संगान से हुई। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप के उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत ने किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप के उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत ने सभी का स्वागत और अभिनंदन किया।

उन्होंने तेयुप विजयनगर को छठी बार सफलतापूर्वक सीपीएस (कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग) कार्यशाला आयोजित करने पर बधाई दी और प्रतिभागियों को वाक्-कला में निपुण होने के लिए नियमित रूप से पब्लिक स्पीकिंग का अभ्यास करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, उद्यमी और समाजसेवी संजय बैद ने अपने वक्तव्य में प्रतिभागियों को मिले प्रशिक्षण को जीवन में आत्मसात करने के लिए अभ्यास की महत्ता पर जोर दिया।

सीपीएस मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया और उन्हें सीपीएस जोनल के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

शाखा प्रभारी रोहित कोठारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सीपीएस प्रोविजनल नेशनल ट्रेनर नूतन लोढ़ा, शैफाली जैन, धर्मश कोठारी ने अपनी महत्वपूर्ण विचारों को साझा किया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए मुंबई और बैंगलोर से आए प्रशिक्षक और प्रशिक्षिकाओं की सराहना की। तेयुप प्रबंध मंडल ने प्रशिक्षक एवं महिला मंडल की उपाध्यक्ष सुमित्रा बरड़िया और बरखा जैन द्वारा प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया।

इस अवसर पर पाँच सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों, प्रायोजक परिवारों और सभी सम्मानित अतिथियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य सहयोगी भंवरलाल, तेजकुमार, अशोककुमार मांडोत और सह-सहयोगी रतनलाल उम्मेद अमृत नाहटा परिवार रहे।

सप्तदिवसीय सीपीएस कार्यशाला के प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुतियाँ दीं, जिनके आधार पर उन्हें प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

इस अवसर पर अभातेयुप सदस्य, स्थानीय परिषद और सभा पदाधिकारीगण और अन्य संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी व तेयुप सदस्यों की उपस्थिति रही।

सप्त दिवसीय कार्यशाला में सीपीएस संयोजक विनीत गांधी और गौरव चोपड़ा का अथक परिश्रम रहा।

तेयुप सहमंत्री पवन बैद ने सबका आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
13 जनवरी - 19 जनवरी, 2025

संक्षिप्त खबर

सामाजिक सेवा कार्य

उदयपुर। तेरापंथ युवक परिषद व तेरापंथ किशोर मंडल, उदयपुर द्वारा दीपवाली पर शुरू किए गए कार्यक्रम 'खुशियों की दिवाली' को आगे बढ़ाते हुए कंपाने वाली सर्दी में जरूरतमंद व निराश्रित लोगों को ठंड से राहत देने का प्रयास करते हुए तेयुप के साथियों द्वारा परिवार एवं बच्चों सहित मुणवास गांव की भील बस्ती में 100 से अधिक जरूरतमंद बच्चों को नए कपड़े बांटे गये। कार्यक्रम में मुणवास गाँव के सरपंच नारायण सिंह का सहयोग भी प्राप्त हुआ।

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा राजाजीनगर स्थित गवर्नमेंट हाई स्कूल में मानव सेवा कार्य संपादित किया गया। स्कूल में प्रवासित 40 बच्चियों को दैनिक जरूरत की सामग्री प्रदान की गई।

तेयुप उपाध्यक्ष राजेश देरासरिया ने बच्चों से वार्तालाप करते हुए अच्छी शिक्षा ग्रहण करने की और जीवन में कुछ बनने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर तेयुप से राजेश देरासरिया, विनोद कोठारी, रवि चौधरी, विक्रम बोहरा की उपस्थिति रही।

प्रेक्षा ध्यान कार्यशालाएं आयोजित

हैदराबाद। अंतर्राष्ट्रीय ध्यान दिवस के उपलक्ष में प्रेक्षा फाउंडेशन के अंतर्गत हैदराबाद में कई स्थानों पर प्रेक्षा ध्यान कार्यशालाएं आयोजित की गई। प्रेक्षा वाहिनी हिमायत नगर, लाफिंग क्लब बोगलकुंता, सुंदरी सामाजिक जॉन, जैन सेवा संघ, वृद्ध आश्रम, कन्या मंडल एग्जिबिशन, जैन तत्व विद्या एग्जामिनेशन हॉल, बरकतपुरा पार्क हिमायत नगर आदि स्थानों पर समताल श्वास प्रेक्षा, बॉक्स ब्रीदिंग आदि के प्रयोग करवाए गए। साउथ जॉन को-ऑर्डिनेटर डिंपल जैन बैद, प्रेक्षा प्रशिक्षक नविता नाहटा, पूजा पटावरी, चंदा बोरड़, रीता सुराणा, बबीता संचेती, प्रेम संचेती आदि ने विभिन्न स्थानों पर कार्यशालाओं का आयोजन किया।

मदुरै। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार मदुरै तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मंडल की बहनों द्वारा सीमंधर स्वामी स्तुति व प्रेक्षा ध्यान गीत से किया गया। कार्यशाला की मुख्य वक्ता दीपिका नाहटा ने प्रेक्षा ध्यान का अर्थ व प्रत्येक अवयव के बारे में समझाया।

प्रेक्षा ध्यान के पांच सूत्र जीवन शैली से जुड़े हैं। पहले भाव क्रिया (मन की एकाग्रता का प्रयास), दूसरा प्रतिक्रिया विरति (सुनने समझने में जागरूकता), तीसरा मैत्री भाव (सब प्राणियों के प्रति मैत्री भावना), चौथा मिताहार व पांचवा मितभाषण। अंतर्यात्रा का भी प्रयोग करवाया गया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

कैंसर जागरूकता अभियान

नवरंगपुर। अभातेममं के निर्देश अनुसार तेरापंथ महिला मंडल नवरंगपुर द्वारा नरेश जैन के निवास स्थान पर कैंसर जागरूकता अभियान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत भगवान पार्श्वनाथ स्तुति से की गई। डॉक्टर शैली ने अपने वक्तव्य में कैंसर के कारणों और उपायों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। मंडल की बहनों को बताया गया कि वे घरों की रसोई, होटल आदि में फॉयलपेपर और न्यूज़ पेपर इस्तेमाल न करके उसके जगह बटर पेपर, पार्चमेंट पेपर, फूड ग्रेडिंग पेपर इस्तेमाल करें, साथ ही इसके नुकसान के बारे में बताया और पोस्टर भी लगाया गया। अंत में बहन पूजा ने सबका आभार वक्त किया।

सप्त दिवसीय सीपीएस कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का आयोजन

अमराईवाड़ी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेयुप अमराईवाड़ी ओढव द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय सीपीएस कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का आयोजन अभातेयुप उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता की अध्यक्षता में अमराईवाड़ी में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत तेयुप साथियों द्वारा मंगलाचरण से की गई।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने किया। उपाध्यक्ष मेहता ने उपस्थित सीपीएस प्रतिभागी एवं श्रावक समाज का स्वागत करते हुए सीपीएस कार्यशाला की विस्तृत जानकारी दी। तेयुप अमराईवाड़ी के अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने समस्त श्रावक समाज का स्वागत करते हुए तेयुप द्वारा हो रहे कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी। सीपीएस राष्ट्रीय प्रशिक्षक अखिल मारू, शाखा प्रभारी कुलदीप नवलखा ने प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन करते हुए परिषद् के कार्यों की सराहना की।

मुख्य अतिथि नवरत्न चिप्पड़ ने अपने वक्तव्य में परिषद् को सभा की ओर से हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। सीपीएस के सभी सदस्यों ने अपने विषय पर बेहतरीन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के पश्चात सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। परिषद् द्वारा प्रायोजक परिवारों का सम्मान किया गया। तेयुप मंत्री सुनील चिप्पड़ ने आभार ज्ञापन किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक आकाश शाह का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में हितेश चपलोत, राजेन्द्र बाफना, अशोक सिंघवी ने विशेष श्रम नियोजन किया।

कार्यक्रम में सीपीएस ट्रैनर सुरभि शाह, शिवानी जैन, सभा, युवक परिषद, महिला मंडल के गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही।

श्रीउत्सव का सफल आयोजन

राजलदेसर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित, तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल राजलदेसर द्वारा श्रीउत्सव का सफल आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राजकुमार विनायक एवं स्थानीय भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष एवं सभा के सह मंत्री (द्वितीय) पवन बोथरा की अध्यक्षता में भैरव बाबा अतिथि भवन में किया गया। उत्सव का शुभारंभ तेरापंथ भवन में विराजित 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी से मंगल पाठ सुनकर श्री भैरव बाबा अतिथि भवन में महिला मंडल एवं कन्या मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री रीना बैद ने पधारे हुए पदाधिकारियों, अतिथि गणों एवं उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। श्रीउत्सव में लघु स्तर पर काम करने वाले स्टालों को प्राथमिकता दी गई। 20 से अधिक विभिन्न प्रकार की स्टॉल लगाई गई। कन्या मंडल द्वारा प्ले एंड प्लेटर गेम का आयोजन किया गया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

इरोड।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल इरोड के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रेक्षाध्यान ट्रेनर मोहनलाल बोथरा और वीणा बोथरा ने केंद्र द्वारा प्रदत समय सारणी के अनुरूप कार्यशाला का समायोजन किया। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। महिला मंडल की मंत्री पूनम दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। प्रशिक्षक वीणा बोथरा ने ध्यान का अर्थ, इतिहास एवं जीवन शैली का महत्व बताते हुए कहा की ध्यान का अर्थ है स्वयं को देखना। उन्होंने जीवन जीने की कला को सरल और प्रभावी तरीके से समझाया। समताल श्वास प्रेक्षा एवम् दीर्घ श्वास प्रेक्षा के प्रयोग को कराते हुए उनके महत्व को समझाया। तत्पश्चात ट्रेनर मोहनलाल बोथरा ने कायोत्सर्ग के आध्यात्मिक एवम् वैज्ञानिक महत्व को समझाते हुए ध्यान की क्रिया को बताया। अंतिम चरण में प्रेक्षा चर्या के सूत्रों का स्पष्टीकरण करते हुए, सभी की जिज्ञासाओं का समाधान दिया। सभा पदाधिकारियों द्वारा मोहनलाल बोथरा का सम्मान किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा पिंकी भंसाली ने वीणा देवी बोथरा का सम्मान किया। कार्यक्रम में कुल 60 सदस्यों की उपस्थिति रही। महिला मण्डल अध्यक्षा पिंकी भंसाली एवं मंत्री पूनम दुगड़ के प्रयासों से कार्यशाला सफल रही।

कैंसर जागरूकता अभियान आयोजित

गुवाहाटी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज कार्यक्रम के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अध्यक्ष अमराव बोथरा के नेतृत्व में विभिन्न होटलों, रेस्टोरेंट व खाने-पीने की वस्तुएं बेचने वाले फूड स्टॉल्स, बेकरी प्रतिष्ठान, दुकानों आदि पर जाकर कैंसर जागरूकता अभियान के पोस्टर लगाकर प्रचार किया गया। सभी को न्यूजपेपर व अल्युमिनियम फॉयल पेपर में खाने-पीने की वस्तुएं नहीं देने की प्रेरणा दी। न्यूजपेपर व अल्युमिनियम फॉयल पेपर से हानिकारक रसायन कैडमियम से कैंसर जैसी महामारी हो सकती है, इसलिए फूड ग्रेडिंग पेपर, बटर पेपर, मार्चमेंट पेपर आदि का प्रयोग करने की जानकारी देते हुए बटर पेपर का वितरण भी हर जगह किया गया। मंत्री ममता दूगड़ ने वर्ष भर चलने वाले इस अभियान के बारे में अवगत करवाया। संयोजिका मंजू बेगवानी व पुखराज गोलछा का सराहनीय प्रयास रहा। इसी श्रृंखला में स्थानीय मेयर मृगेन शरनीया से भी मंडल की बहनों ने मुलाकात की तथा उन्हें पोस्टर व ज्ञापन दिया। इस आशय की जानकारी प्रचार-प्रसार मंत्री विनीता सुराना ने दी।

रक्तदान शिविरों के विभिन्न आयोजन

विक्रॉली, मुंबई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में मुंबई MBDD-RHYTHM 2024 के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद विक्रोली द्वारा पहला रक्तदान शिविर का आयोजन सोसरदेवी थेरेपी सेंटर एवं दूसरा रक्तदान शिविर का आयोजन राज लिगेसी सोसाइटीज में किया गया। पहले सेंटर में 38 यूनिट व् दूसरे सेंटर में 46 यूनिट टोटल 84 यूनिट रक्त का संग्रहण हुआ। नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण के द्वारा संस्कारक मालचंद भंसाली द्वारा जैन संस्कार विधि से कैम्प का शुभारंभ हुआ। नगरसेविका ने परिषद द्वारा किए जा रहे मानव सेवा के इस अभियान की सराहना की। युवक परिषद के सभी कार्यकर्ताओ ने इस कैम्प के लिए अपने श्रम का नियोजन करते हुए कार्य किया। कैम्प को सफल बनाने में संयोजक संतोष सिंघवी, जयंतीलाल राठोड व देव कोठारी आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अध्यक्ष मनीष बोहरा, मंत्री विपिन पोखरना ने रक्तदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना प्रेषित की। विशेष सहयोग मदनलाल दीपक कुमार सूर्या परिवार का रहा।

काजुपाड़ा, मुंबई। तेरापंथ युवक परिषद काजुपाड़ा द्वारा तेरापंथ भवन के प्रांगण में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 85 यूनिट रक्त का संग्रहण अन्वीक्षा ब्लड बैंक के द्वारा किया गया। शिविर में अभातेयुप राष्ट्रीय प्रथम सहमंत्री भूपेश कोठारी, युवा वाहिनी सह संयोजक महेश परमार, काजुपाड़ा परिषद प्रभारी एवं MBDD मुंबई के संयोजक अमित रांका ने सहभागिता करके रक्त दाताओं का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान के साथ हुई । तेयुप अध्यक्ष नरेश पगारिया ने सभी का स्वागत किया । कार्यक्रम में नगर सेवक विजु शिंदे, नगर सेवक हरीश भांदिर्गे, आमदार दिलीप मामा लांडे के सुपुत्र प्रणव लांडे आदि गणमान्य जनों सराहनीय उपस्थिति रही। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष अनिता पगारीया एवं उनकी टीम की उपस्थिति भी रही। तेयुप मंत्री आयुष चौधरी, कोषाध्यक्ष अंकुर सिंघवी, मेघा ब्लड डोनेशन ड्राइव के संयोजक पंकज चण्डालिया, साहिल धोका ने आभार व्यक्त किया।

पूर्वांचल कोलकाता। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल-कोलकाता एवं तेरापंथ युवक परिषद् साउथ-कोलकाता के सहयोग द्वारा कोलकाता के सियालदाह मेट्रो स्टेशन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र से इस शिविर का शुभारंभ हुआ। 58 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर में पूर्वांचल कोलकाता एवं साउथ कोलकाता तेयुप पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों की सक्रिय उपस्थिति रही।

अहमदाबाद। अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद एवं लेंडिंग कार्ट द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन किया गया। कैम्प में प्रथमा ब्लड बैंक के सहयोग से 108 यूनिट का संग्रह किया गया।

संक्षिप्त खबर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा मरियप्पनपाल्या स्थित गायत्री पार्क में निःशुल्क मधुमेह जांच शिविर का समायोजन किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से करते हुए उपस्थित सदस्यों का ग्लूकोमीटर के माध्यम से मधुमेह की जांच की गई।

शिविर में कुल 95 सदस्य लाभान्वित हुए। अंग्रेजी नववर्ष के अवसर पर मंजुश्री मेडिकल के सहयोग से तेयुप राजाजीनगर द्वारा एटीडीसी श्रीरामपुरम के प्रचार-प्रसार हेतु नववर्ष 2025 का कन्नड़ भाषा में मुद्रित कैलेंडर का वितरण किया गया। तेयुप से जयंतीलालजी गांधी, विनोद कोठारी, हरीश पोरवाड़ एवं अनिमेश चौधरी ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

तप से होती है आत्मिक परिशुद्धि

साउथ कोलकता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में संपत देवी दुगड़ के मासखमण तप (31 दिन) के प्रत्याख्यान के अवसर पर मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन साउथ कलकत्ता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- भारतीय संस्कृति में त्याग का बड़ा महत्त्व है। कुछ विरले लोग ही त्याग करते है। तप अध्यात्म का संगीत है। तप भविष्य का दर्पण है। तप से काया कुंदन होती है। तपस्या से मानसिक शांति मिलती है और आत्मिक परिशुद्धि होती है। तपस्या से संकटों का नाश होता है। धन्य होते है वे लोग जो तपस्या करके महान निर्जरा करते है। इस मौसम में संपत बाई दूगड़ ने मासखमण करके हिम्मत व साहस का परिचय दिया है। मुनि परमानंद जी ने कहा संपत बाई ने तपस्या कर मनोबल का परिचय दिया। इस अवसर पर तपस्वी को प्रदत्त साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन करते हुए साउथ कोलकता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विनोद जी चोरड़िया ने तपस्वी के तप की अनुमोदना करते हुए अभिनंदन किया। अभिनंदन पत्र का वाचन सहमंत्री मनोज दुगड़ ने किया। दक्षिण हावड़ा सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, मोहिनी देवी सुराणा, पुत्र वधु आस्था दुगड़ व नीलांचल अपार्टमेन्ट की महिलाओं ने तप अनुमोदना में अपने भावों की प्रस्तुति गीत व वक्तव्य के माध्यम से दी। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री कमल कोचर ने किया। सभा द्वारा तपस्वी का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि कुणाल कुमार जी ने किया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

जिम्मेदारी, कर्तव्य और कौशल का करें सम्यक् उपयोग

अहमदाबाद।

बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि उदितकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ समाज, अहमदाबाद ने विशेष कार्यशाला संप्रेरणा समारोह का आयोजन किया।

'पूज्यवर का प्रवास - कैसे बनाएं खास' विषय पर अपने उद्बोधन में मुनिश्री ने कहा- जहां-जहां परम पूज्य गुरुदेव का प्रवास, पावन पदार्पण होता है, वहां के लोगों के जीवन के लिए वह अमूल्य क्षण होता है। कहते हैं कि महान लोगों के पावन चरण जिस धरती पर पड़ जाए वह धरती देवभूमि कहलाती है। वैसे ही परम पूज्य गुरुदेव का चार माह से कुछ अधिक का यह अहमदाबाद चातुर्मास अहमदाबाद वासियों के लिए एक वरदान है। पूज्यवर जहां पधारते हैं वहां अलग ही रौनक होती है। पूज्य प्रवर का हर प्रवास ऐतिहासिक ही होता है। अहमदाबाद का यह प्रवास भी ऐतिहासिक ही होगा क्योंकि गुरुओं का अतिशय अमाप्य होता है। कार्यकर्ता प्रयास करें कि वे ज्यादा से ज्यादा समय सेवा में देकर, अपने दायित्व एवं अपनी जिम्मेदारी, कर्तव्य को समझ कर अपने कौशल का सम्यक उपयोग कर इस चातुर्मास की ऐतिहासिकता में स्वयं भी योगभूत बनें। तभी सही मायने में पूज्यवर के इस प्रवास को स्वयं के लिए भी खास बना पाएंगे। मुनिश्री ने कार्यकर्ताओं में विशेष उत्साह का संचार करते हुए माइक्रो मैनेजमेंट के कई सूत्र प्रदान किये। प्रवचन से पूर्व मुनिश्री ने हाजरी का वाचन किया। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कांकरिया मणिनगर के अध्यक्ष चंपालाल गांधी ने मुनिश्री के स्वागत में अपनी भावना व्यक्त की। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा प्रस्तुति दी गई। सभा मंत्री सचिन सुराणा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन नलिन दुगड ने किया।

आत्मा की यात्रा के लिए आवश्यक है ध्यान

दालखोला, बंगाल।

मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, दालखोला में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। मंडल की बहनों ने 'महाप्रज्ञ-अष्टकम्' के साथ मंगलाचरण किया। मुनि विकास कुमार जी ने 'शांति का आधार प्रेक्षाध्यान है' गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सामूहिक प्रेक्षाध्यान गीत प्रस्तुत किया गया।

मुनि आनंद कुमार जी ने कहा कि ध्यान साधना जीवन की धारा को बदलने का साधन है। आचार्य श्री तुलसी की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए, लगभग 50 वर्ष पूर्व, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने ध्यान का नवीनीकरण कर प्रेक्षाध्यान जैसी विधा की स्थापना की। यह मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और तनाव मुक्ति के लिए अत्यंत उपयोगी है।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में भावनात्मक और मानसिक तनाव से बचाने के लिए प्रेक्षाध्यान एक सफल समाधान है। सहनशीलता और धैर्यशीलता की कमी, छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आ जाना आदि समस्याओं का समाधान प्रेक्षाध्यान में निहित है। आज संपूर्ण विश्व में प्रेक्षाध्यान की ख्याति बढ़ रही है। ध्यान के महत्व को समझाते हुए मुनि श्री ने कहा कि ध्यान अंदर की यात्रा है। मनुष्य बाहरी जगत में घूम लेता है, लेकिन आत्मा की यात्रा के लिए ध्यान आवश्यक है। ध्यान के बिना ज्ञान भी संभव नहीं है। उन्होंने ध्यान को आत्मा की खोज और आत्मा से आत्मा के संवाद का माध्यम बताया।

मुनि श्री ने कार्यशाला के दौरान कायोत्सर्ग, महाप्राण ध्वनि, दीर्घ श्वास और मृदुता की अनुप्रेक्षा का अभ्यास करवाया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष वंदना बैद ने कार्यशाला का कुशल संचालन किया। ममता बैद ने आभार प्रकट किया। तेरापंथ महिला मंडल की पूरी टीम और समाज के अनेक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

संबोधि

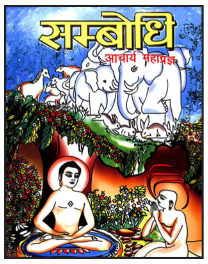

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

२६. देहस्योपाधिभेदेन, यो वात्मानं जुगुप्सते।
नात्मा तेनावबुद्धोऽस्ति, नात्मवादी स मन्यताम्।।

शरीर की भिन्नता होने के कारण जो दूसरी आत्मा से घृणा करता है, उसने आत्मा को नहीं जाना। उसे आत्मवादी नहीं मानना चाहिए।

शरीर की भिन्नता के पीछे आत्मा की भिन्नता नहीं है। आत्मा एक है, सदृश है। जिसे आत्मा ज्ञात है, दृष्ट है वह आकृति को महत्त्व नहीं देता और न शरीर-भेद के आधार पर किसी का आदर और अनादर करता है। शरीर को महत्त्व देने का अर्थ है-राग-द्वेष को महत्त्व देना। देहाश्रित सम्मान व अपमान दोनों ही उसके लिए बंधन के कारण होते हैं। आत्मवादी बाह्य को प्राधान्य नहीं देता। वह जानता है, समझता है कि यह आकार-भेद है, चैतन्य भेद नहीं किन्तु अनात्म-द्रष्टा की दृष्टि ऊपर की ओर नहीं उठती। वह इन्द्रियों के पार के जगत् को देखने में सक्षम नहीं होती। इसलिए वह बाहर ही उलझा रहता है।

जनक की सभा में स्वयं को आत्मवादी मानने वाले अनेक विद्वज्जन सम्मिलित हुए। तर्क-वितर्क भी चल रहे थे। अष्टावक्र मुनि के पिता भी वहीं थे। वे पराजित हो रहे थे। अष्टावक्र को पता चला। वे जनक की सभा में आए। विद्वानों ने देखा अष्टावक्र को, जो आठ स्थानों से टेड़े-मेढ़े थे। सभी विद्वान खिल-खिलाकर हंसने लगे। अष्टावक्र ने राजा जनक से कहा- 'क्या यह चमारों की सभा है? केवल मेरी चमड़ी को देखने वाले चमार ही हो सकते हैं।' सभी सभासद् अवाक् रह गए। जनक को लगा यह बालक ज्ञानी है। उसने सिंहासन से नीचे उतर कर निवेदन किया-महलों में पधारें और मेरी जिज्ञासाओं का समाधान करें। 'अष्टावक्र गीता' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

उम्मर खय्याम ने कहा है-जब मैं जवान था तो बहुत पंडितों के द्वार पर गया, वे बड़े ज्ञानी थे। मैंने उनकी चर्चा सुनी, पक्ष-विपक्ष में विवाद सुने। जिस दरवाजे से गया, उसी दरवाजे से वापस लौट आया।

मेघः प्राह

२७. विशालवपुषः केचित्, केचित् तुच्छशरीरकाः।
किमस्ति सदृशो दोषः, तेषां प्राणातिपातने?

मेघ बोला-कुछ जीवों का शरीर विशाल है और कुछ जीवों का शरीर छोटा है। क्या उनकी हिंसा में दोष एक जैसा होता है? (क्रमशः)

श्रमण महावीर

नारी का बन्ध-विमोचन

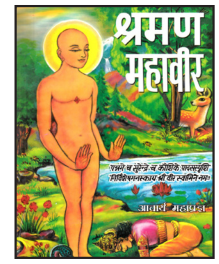

चंदना का यह चित्र भगवान के प्रातिभज्ञान में अंकित हो गया। दासी के इस वीभत्स रूप में ही उन्हें चंदना के उज्ज्वल भविष्य का दर्शन हो रहा था।

भगवान् कौशाम्बी के घरों में भिक्षा लेने गए। लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ उन्हें भोजन देना चाहा। पर भगवान् उसे लिये बिना ही लौट आए। दूसरे दिन भी यही हुआ। तीसरे-चौथे दिन भी यही हुआ। लोगों में बातचीत का सिलसिला प्रारम्भ हो गया।

भगवान् भिक्षा के लिए घरों में जाते हैं पर भोजन लिये बिना ही लौट आते हैं, यह क्यों? यह प्रश्न बार-बार पूछा जाने लगा।

चार मास बीत गए। भगवान् का सत्याग्रह नहीं टूटा। कौशाम्बी के नागरिक यह जानते हैं कि भगवान् भोजन नहीं कर रहे हैं, पर यह नहीं जान पाए कि वे भोजन क्यों नहीं कर रहे हैं? भगवान् इस विषय पर मौन हैं। उनका मौन-संकल्प दिन-दिन सशक्त होता जा रहा है।

सुगुप्त कौशाम्बी का अमात्य है। उसकी पत्नी का नाम है नंदा। वह श्रमणों की उपासिका है। भगवान् भिक्षा के लिए उसके घर पधारे। उसने भोजन लेने का बहुत आग्रह किया, पर भगवान् ने कुछ भी नहीं लिया। नंदा मर्माहत-सी हो गई। तब उसकी दासी ने कहा, 'सामिणी! इतना दुःख क्यों? यह तपस्वी कौशाम्बी के घरों में सदा जाता है पर कुछ लिये बिना ही वापस चला आता है। चार महीनों से ऐसा ही हो रहा है, फिर आप इतना दुःख क्यों करती हैं?'

दासी की यह बात सुन उसका अन्तःस्तल और अधिक व्यथित हो गया।

अमात्य भोजन के लिए घर आया। वह नंदा का उदास चेहरा देख स्तब्ध रह गया। उदासी का कारण खोजा, पर कुछ समझ नहीं पाया।

नंदा की गंभीरता पल-पल बढ़ रही थी। उसकी आकृति पर भावों की रेखा उभरती और मिटती जा रही थी। अमात्य ने आखिर पूछ लिया, 'प्रिये! आज इतनी उदासी क्यों है?'

'बताने का कोई अर्थ हो तो बताऊं, अन्यथा मौन ही अच्छा है।'

'बिना जाने अर्थ या अनर्थ का क्या पता लगे?'

'क्या अमात्य का काम समग्र राज्य की चिन्ता करना नहीं है?'

'अवश्य है?'

'क्या आपको पता है, राजधानी में क्या घटित हो रहा है?'

'मुझे पता है कि समूचे देश में और उसके आसपास क्या घटित हो रहा है?'

'इसमें आपका अहं बोल रहा है, वस्तुस्थिति यह नहीं है। क्या आपको पता है, इन दिनों भगवान् महावीर कहां हैं?'

'मैं नहीं जानता, किन्तु जानना चाहता हूं।'

'भगवान् हमारे ही नगर में विहार कर रहे हैं।'

'तब तो तुम्हें प्रसन्नता होनी चाहिए, उदासी क्यों?'

'भगवान् की उपस्थिति मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है, किन्तु यह जानकर मैं उदास हो गई कि भगवान् चार महीनों से भूखे हैं।'

'तपस्या कर रहे होंगे?'

'तपस्या होती तो वे भिक्षा के लिए नहीं निकलते। वे प्रतिदिन अनेक घरों में जाते हैं, किन्तु कुछ लिये बिना ही वापस चले आते हैं।' (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री आसूजी (पींपाड़) दीक्षा क्रमांक 57

साध्वीश्री आचार्यश्री भारमलजी की प्रथम शिष्या थी। आप साधुक्रिया में सतत जागरूक, विनयी, लज्जाशील व क्षमादिक गुणों में वर्धमानना लाती रहीं। आपने ज्ञानार्जन भी बहुत किया। आपने उपवास, बेले आदि से लेकर 12 दिन तक का तप किया। सर्दी में बहुत शीत सहन किया।

12 वर्ष संयम पालकर अन्तिम अनशन कर स्वर्गप्रस्थान किया।

– साभारः शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 जनवरी - 19 जनवरी, 2025

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

ममत्व-विसर्जनम् अपरिग्रहः

पाप बन्धन का मूल कारण अन्तरंग परिग्रह है, मूर्च्छा है। परन्तु मूर्च्छा को परिपुष्ट करने में बाह्य परिग्रह का भी योगदान मिल जाता है। अतः उसका भी समुचित परिवर्जन आवश्यक हो जाता है। दूसरी बात, जिसके मूर्च्छा नहीं है, वह बाह्य पदार्थों का अनपेक्षित संग्रह क्यों करेगा? 'अनासक्ति शब्द को ओट में (हम तो भीतर से अनासक्त हैं, यह कहते हुए) पदार्थ-संग्रह और विषयभोग करने वाले व्यक्ति कभी-कभी आत्मछली बन जाते हैं। वस्तुतः अनासक्ति हो तो वह स्तुत्य और अभिनन्दनीय है।

मुनि पूर्णतया अपरिग्रही होता है। श्रावक उसके स्थान पर इच्छा परिमाण व्रत को स्वीकार करता है, वह नवधा बाह्य परिग्रह का सीमाकरण करता है और उसके माध्यम से अन्तरंग परिग्रह को कृश करने की साधना करता है।

क्षेत्र (खुली भूमि), वास्तु (मकान आदि), हिरण्य (चांदी), सुवर्ण, धन, धान्य, द्विपद (दास आदि), चतुष्पद (गाय, भैंस आदि), कुप्य (तांबा, पीतल आदि धातु तथा अन्य गृहसामग्री, यान-वाहन आदि) यह नौ प्रकार का परिग्रह श्रावक के लिए संयमनीय होता है।

संसार में अनेक प्रकार की शक्तियां हैं। उनमें अर्थ (धन) भी एक शक्ति है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अर्थ सुअर्थ रहे, वहां तक तो कोई चिन्ता नहीं, परन्तु जहां अर्थ अनर्थ करने वाला बन जाता है, तब विचारणीय स्थिति बन जाती है, इस संदर्भ में भिक्षु ग्रन्थरलाकर का निम्नांकित पद्य मननीय है–

प्रेम घटारण सजना रो, दुरगत नो दातार।
अणचिन्त्या अनर्थ करे, धन ने पड़ो धिकार।।

जो स्वजनों के प्रेम को घटाता है, जीव की दुर्गति करता है, अचिन्तित अनर्थ पैदा करता है, ऐसे धन को धिक्कार।

अर्थार्जन में साधनशुद्धि का संकल्प भी अपरिग्रहीवृत्ति को पुष्ट करता है। दूसरों का शोषण कर पैसा इकट्ठा कर धनवान् बन जाना और नाम ख्याति के लिए कुछ दान देकर दानी कहलाना कौन-सा स्पृहणीय कार्य है? ऐसे दान को दूर से ही नमस्कार कर पहले अर्थार्जन की शुद्धि पर ध्यान दिया जाना चाहिए, धोखाधड़ी और शोषण का परित्याग किया जाना चाहिए।

व्यापारी ने नयी-नयी कपड़े की दुकान खोली। बार-बार उसके मन में एक ही विचार आता था कि दुकान का विकास कैसे हो? कमाई ज्यादा कैसे हो? येन-केन प्रकारेण वह धनाढ्यों को सूची में अपना नाम पढ़ने के लिए समुत्सुक था।

आवश्यकता की पूर्ति एक बात है और आकांक्षा की पूर्ति दूसरी बात है। आवश्यकता पूर्ति की मांग को असंगत नहीं कहा जा सकता। किन्तु महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति और वह भी अवैध तरीकों से समुचित कैसे हो सकती है?

रात्रि का प्रथम प्रहर। व्यापारी ने दुकान को बढ़ाया (बन्द किया) और घर चला आया। भोजन करने के बाद शयनार्थ वह शय्या पर पहुंच गया। वह लेटा, पर नींद नहीं आई। संकल्प-विकल्पों का सिलसिला चालू था। उन्हें विराम भी उसने कहां दिया था? न तो उसने शयन से पूर्व नमस्कार महामंत्र जैसे पवित्र मन्त्र का स्मरण किया और न ही उसने आत्म निरीक्षण का प्रयोग किया। सत्साहित्य का स्वाध्याय भी नहीं किया! परिग्रह (कमाई) का संकल्प उसकी तृष्णाग्नि को प्रदीप्त कर रहा था। करवटें बदलते-बदलते आखिर उसे नींद अवश्य आई, पर गहरी और निश्चिन्तता भरी नींद का सुख उसे सुलभ नहीं हुआ। जिन विचारों को उधेड़बुन में वह सोया था, उन्हीं को अब वह चलचित्र के दृश्यों की भांति सपने के रूप में देखने लगा। वह देखता है कि प्रातःकाल का समय हो गया है। स्नान और प्रातराश कर मैं दुकान में पहुंच गया हूं। एक ग्रामीण आया है और वह मुझे कपड़ा देने के लिए कह रहा है। उस (ग्रामीण) ने पूछा- सेठ साहिब! अमुक कपड़े का क्या दाम लेंगे?

वस्तुतः मूल्य था प्रतिमीटर दो रुपया, परन्तु व्यापारी ने सोचा, अभी पैसा कमाने का अच्छा मौका है। यह ग्राहक तो भोला पंछी है। यह क्या समझेगा होशियारी को। दुकानदार ने कहा- चार रुपया एक मीटर। दुगुना मूल्य बता दिया। 'सेठ साहिब! यह तो बहुत ज्यादा कीमत है, मैं कैसे चुका पाऊंगा?'

'अरे! तुम्हें लेना हो तो लो, सुबह का समय है, बकवास मत करो।'

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

जनवरी 2025
सप्ताह के विशेष दिन

20 जनवरी	26 जनवरी
भगवान पद्मप्रभु च्यवन कल्याणक	भगवान शीतलनाथ जन्म एवं दीक्षा कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य श्री जीतमलजी युग

मुनिश्री गौरीदासजी (धोईन्दा) दीक्षा क्रमांक 246

मुनिश्री ने सं 1947 के चतुर्मास में प्रतर तप किया। प्रतर तप में 100 दिन लगते है, उपवास से पंचोले तक का तप पांच-पांच बार किया जाता है, उसमें 75 दिन तप के और 25 दिन पारणे के आते हैं। उनका क्रम इस प्रकार है–

1	2	3	4	5
3	4	5	1	2
5	1	2	3	4
2	3	4	5	1
4	5	1	2	3

उसी चतुर्मास में एक बेला और 4 उपवास और किये। 1948 में एक अठाई, एक पंचोला और 25 उपवास किये।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
13 जनवरी - 19 जनवरी, 2025

नव वर्ष 2025 के शुभारंभ में वृहद् मंगलपाठ के विविध आयोजन

लाडनूं

मुनि रणजीतकुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी द्वारा जैन विश्व भारती के महाश्रमण विहार में नव वर्ष के उपलक्ष्य में वृहद मंगल पाठ का श्रवण करवाया गया। सर्व प्रथम मुनि जयकुमार जी ने भक्तामर स्तोत्र एवं अनेकानेक मंत्रोच्चार का श्रवण करवाया। मुनि कौशल कुमार जी ने नववर्ष के उपलक्ष्य में सुन्दर गीतिका का संगान किया। मुनि रणजीत कुमार जी ने वृहद् मंगलपाठ का उच्चारण किया। इस अवसर पर सभी संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं जैन विश्व भारती परिवार के साथ आस-पास के क्षेत्रों से भी भाई-बहनों की उपस्थिति रही। आभार राजकुमार चोरड़िया ने किया।

नई दिल्ली

साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में नए वर्ष की शुरुआत मंगल प्रभात के साथ हुई, जिसमें संकल्पों का आगाज़ किया गया। साध्वी कुन्दनरेखाजी एवं सहवर्ती साध्वी वृंद ने मंत्रोच्चारण के साथ वृहद् मंगलपाठ का श्रवण करवाया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि जीवन एक अवसर है। हर पल को समझकर जीने वाला इंसान हर क्षण को नवीनता से देखता है। समय सबसे छोटी इकाई है, जो काल के रूप में नवीनता के साथ प्रकट होता है। नए वर्ष का संदेश है कि नई ऊर्जा के साथ हर दिन को एक नए अंदाज़ में जिएं। स्वार्थपरक भावनाओं को तिलांजलि दें, ताकि संघ, राष्ट्र, और समाज में विकास के नए क्षितिज खुल सकें। कर्तव्य के प्रति निष्ठा कल्याणकारी होती है। सात्विक व्यवहार, उन्नत आचार और सकारात्मक विचार चेतना की अनमोल धरोहर हैं। साध्वीश्री ने मोबाइल उपयोग को नियंत्रित करने पर विशेष जोर देते हुए कहा कि खाने के समय, रात को अधिकतम 11 बजे तक, और वाहन चलाते समय मोबाइल से दूर रहें, ताकि विपत्तियों से बचा जा सके। साध्वीश्री ने नववर्ष के अवसर पर सभी श्रावक समाज के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामनाएं प्रेषित कीं। साध्वी सौभाग्ययशाजी ने कहा कि अतीत अनंत है और इतिहास का विषय बन चुका है। भविष्य अभी सामने नहीं है, लेकिन वर्तमान क्षण हमारे सम्मुख है। आज के दिन यह चिंतन करें कि हर क्षण को सफल कैसे बनाएं। आध्यात्मिक ऊर्जा को गतिमान रखें और प्रमाद से दूर रहें। अनासक्त चेतना का विकास करें, आवेग मुक्त जीवनशैली अपनाएं, और अनुग्रह भावों के साथ आगे बढ़ें। साध्वी कल्याणयशाजी ने कहा कि आज का दिन आत्मनिरीक्षण का दिन है। यह विश्लेषण करें कि गत वर्ष में क्या पाया और क्या खोया? नए वर्ष की दहलीज पर खड़े होकर यह संकल्प करें कि इस वर्ष को आत्म-गुणों के विकास द्वारा सबसे सुंदर बनाएंगे। कार्यक्रम में साध्वी सौभाग्ययशाजी और साध्वी कल्याणयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल दूगड़, अणुव्रत विश्व भारती की उपाध्यक्ष कुसुम लुणिया, और अणुव्रत न्यास के अन्य सदस्यों ने नए वर्ष की शुभकामनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती और टीपीएफ दिल्ली के कैलेंडर का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

चंडीगढ

अणुव्रत भवन में नववर्ष के अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए मुनि विनयकुमार जी 'आलोक' ने कहा कि नया साल हमें जीवन में नई शुरुआत करने का अवसर देता है। उन्होंने लोगों को प्रेरित किया कि वे पुराने अनुभवों से सीखें और नई उम्मीदों व सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ें। उन्होंने जीवन में विनम्रता, क्षमा और जिम्मेदारी को प्राथमिकता देने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि डायरी लिखने की आदत, सोशल मीडिया पर कम समय बिताना, झूठ बोलने की आदत छोड़ना और हर महीने दो अच्छे काम करना जीवन को बेहतर बनाने के साधन हो सकते हैं। इस अवसर पर उन्होंने वृहद् मंगल पाठ और विविध मंत्रों का जाप करवाया। सभा में ट्राईसिटी के बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया।

दादर, मुंबई

'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा-5 के सान्निध्य में नूतन वर्ष के उपलक्ष में वृहद् मंगलपाठ का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक पाठ किया गया।

मंगल स्तुति के बाद साध्वी प्रियंवदा जी, साध्वी प्रेरणाश्रीजी, साध्वी मृदुयशाजी एवं साध्वी ऋद्धियशाजी ने महाप्रभावशाली, विघ्नविनाशक, शांतिदायक विविध मंत्रों का उच्चारण किया। साध्वी विद्यावती जी ने प्रेरणा देते हुए कहा - नये वर्ष के शुभ प्रवेश पर एक संकल्प स्वीकार करें जो आपकी जिंदगी को सम्यक् दिशा की ओर गतिशील कर सके। श्रावक जीवन की साधना में संकल्पों का एक अलग ही प्रभाव होता है। संकल्प दृढ़ है तो विकास भी संभव है। साध्वी प्रियंवदा जी ने कहा मंत्रों एवं आगम वाणी से अपने भीतर एक नई ऊर्जा का संचार होता है। मंत्रों के उच्चारण से अलौकिक शांति की अनुभूति होती है।

दादर, एलपिस्टन, माटुंगा, धारावी, सायन कोलीवाडा, वडाला, गोरेगांव, मलाड, महालक्ष्मी, भायखला आदि उपनगरों से समागत श्रावक-श्राविकाओं ने पूर्ण तन्मयता एवं एकाग्रता के साथ मंत्रों का श्रवण किया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया।

परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला का भव्य आयोजन

ईंट और पत्थर से नहीं, प्रेम और स्नेह से होता है घर का निर्माण

काल्बादेवी, मुंबई।

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के आचार्य तुलसी सभागृह में समायोजित परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- जो व्यक्ति समूह में जन्म लेता है और समूह में जीता है, वह सौभाग्यशाली होता है। समूह का अपना अनुशासन होता है, नियम होते हैं, मर्यादाएं होती हैं। पारिवारिक जीवन में कुछ महत्त्वपूर्ण चिन्तनीय सूत्र होते हैं। समूह में रहने वाला हर सदस्य यह चिन्तन करे- मेरे व्यवहार से दूसरे को समस्या न हो। सबके चिन्तन, विचार अलग-अलग होते हैं, आवश्यक है सद्विचार, सद्चिन्तन का आदर करें।

आज स्थितियां ऐसी बन रही है परिवार के सदस्य एक साथ रहकर भी अकेलेपन की अनुभूति कर रहे हैं। एक छत के नीचे रहते हुए भी बिखरे-बिखरे हैं। मात्र ईंट और पत्थर से बना मकान होता है, सच्चाई यह है - प्रेम और स्नेह से घर का निर्माण हो।

करियर बनाने की होड़ में दौड़ने वाली भावी पीढ़ी को हर अभिभावक संस्कारों का सिंचन दें। बरसात के बिना फसलें नष्ट हो जाती हैं उसी प्रकार संस्कार सिंचन के अभाव में नस्लें खराब हो जाती हैं। आज यही वजह है रिश्ते टूटते जा रहे हैं। जिन्दगी आसान नहीं होती, पर उसे आसान बनाया जा सकता है। सामूहिक जिन्दगी में कई बातों को लेट गो करना सिखे। वक्त आने पर सॉरी बोलना बड़प्पन है।

परिवार में सौहार्द स्थापित करने के लिए कुछ अपने अंदाज से और कुछ बातों को बे अंदाज करना सीखें। यदि किसी की भूल बताएं तो एकान्त में और अच्छाई बतानी हो तो समूह में बताने से चुकें नहीं। पारिवारिक सामंजस्य कायम रखने के लिए अपनी संतानों की सदसंस्कारों से परवरिश करें। करियर और धन बहुत कुछ होते हैं, पर सब कुछ नहीं होते। सम्पूर्ण परिषद को विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वी प्रो. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- अपने परिवार को आदर्श बनाएं। हर अभिभावक अपने दायित्वों को बखूबी निभाएं।

इससे पूर्व साध्वीवृन्द के भिक्षु-स्तवन से कार्यशाला की शुरुआत हुई। साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभा जी ने कहा- परिवार में शान्त सहवास के लिए सम्यक दृष्टिकोण की अपेक्षा है। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी अतुलयशा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने 'परिवार सुहाना उपवन है' गीत का संगान किया। अपने संयोजकीय वक्तव्य में साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने Watch की व्याख्या करते हुए कहा कि W यानी हम अपने words (शब्दों) का सही चयन करें, A अर्थात् कि एक्शन (व्यवहार) ठीक करें, T यानि अपने thoughts (चिन्तन) को सकारात्मक बनाएं, C अर्थात Character (चारित्र) को पवित्र बनाएं और H अर्थात अपनी habits (आदतों) को सही रखने का प्रयास करें।

साध्वी डॉ राजुल प्रभा जी ने कहा - साध्वीश्री जी द्वारा हमें मंत्र के रूप में अनेक सूत्र मिले हैं, उन सूत्रों को अपना कर हम जीवन की राहों पर चलेंगे तो सफलता अवश्य मिलेंगी। इस कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल एवं श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

कैंसर जागरूकता अभियान का आयोजन

कांदिवली, मुंबई। कैंसर जागरूकता अभियान के तहत तेरापंथ महिला मंडल, कांदिवली ने बीएमसी ऑफिस में एक बैठक आयोजित की।

यह बैठक विभा श्रीश्रीमाल की अध्यक्षता में कोर कमेटी टीम द्वारा मनीष इंदुमती भागवत साल्वे (असिस्टेंट कमिश्नर, आर साउथ), दीपा यादव (स्वास्थ्य विभाग मंत्री, कांदिवली) और सुनीता यादव (कॉर्पोरेटर) के साथ संपन्न हुई। बैठक का उद्देश्य कैंसर के सूक्ष्मतम कारणों को समाप्त करने पर ध्यान केंद्रित करना और समाज में ठोस बदलाव लाने के लिए प्रभावी कदम उठाना था। बैठक के दौरान कैंसर जागरूकता अभियान के पोस्टर्स बीएमसी ऑफिस में लगाए गए। अधिकारियों ने कैंसर को जड़ से समाप्त करने के लिए सख्त कदम उठाने का आश्वासन दिया। अभियान के तहत, कांदिवली के विभिन्न क्षेत्रों जैसे ठाकुर कॉम्प्लेक्स, महावीर नगर, लोखंडवाला, कांदिवली वेस्ट, चारकोप और अशोक नगर में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने फेरीवालों और दुकानदारों को कैंसर के जोखिमों के प्रति जागरूक किया।

उन्होंने फॉयल पेपर और न्यूज़पेपर में खाना लपेटने से होने वाले स्वास्थ्य नुकसान के बारे में जानकारी दी और बटर पेपर वितरित करते हुए स्वस्थ विकल्प अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के 2900वें जन्म कल्याणक दिवस पर श्रद्धा प्रणति स्वरूप आयोजित विविध कार्यक्रम

रायपुर

तेरापंथ अमोलक भवन, सदर बाजार में भगवान पार्श्वनाथ के 2900 वें जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सामायिक के साथ जप, तप की आराधना उपासिका ज्योति डागा व सरोज कोठारी के निर्देशन में की गई। ज्योति डागा ने णमोत्थुणं आधारित गीतिका का संगान करते हुए भगवान पार्श्वनाथ के जीवन को प्रकाशित करने का प्रयास किया। वहीं सरोज कोठारी ने 'ऊं ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय नमः' मंत्र जप का प्रयोग करवाया। आराधना में विशेष रूप से सभा उपाध्यक्ष नवरतन डागा, तेममं मंत्री मधुर बच्छावत, तेयुप से वीरेंद्र डागा, गौरव दुगड़, अभय गोलछा, गणेश संखलेचा एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

हनुमानगढ़

श्री जैन श्वेताम्बर आँचलिक सभा श्री गंगानगर हनुमानगढ़ द्वारा भगवान पार्श्वनाथ जयंती के उपलक्ष पर 'ॐ श्री पार्श्वनाथाय नमः' का सवा लाख जाप का लक्ष्य रखा गया। साध्वी सुदर्शनाश्री जी ठाणा 5 व साध्वी प्रज्ञावती जी ठाणा 4 की प्रेरणा से पूरे अंचल में 2,82,810 जाप हुए।

जप संयोजक अनिल रांका व सह संयोजक अनुराग बांठिया ने कार्यक्रम को सुचारु रूप से संचालित किया और पूरे अंचल में जप का क्रम बना। भगवान पार्श्वनाथ जयंती के इस शुभ अवसर पर आंचलिक समिति के अध्यक्ष प्रकाश जैन के नेतृत्व में आंचलिक समिति के प्रयासों द्वारा जप के आध्यात्मिक कार्यक्रम को सफलता पूर्वक आयोजित किया गया।

साउथ कोलकता

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में भगवान पार्श्व जन्म कल्याणक दिवस समारोह श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, साउथ कोलकता द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्व अतीन्द्रिय चेतना के धनी थे। वे साहसी, अभय व पराक्रमशील थे। उन्होंने गृहस्थ अवस्था में ही अज्ञान व अन्धविश्वास की कलई खोल दी थी। वे युवावस्था में दीक्षित हुए और साधना कर तीर्थंकर बनें। उन्होंने चातुर्याम धर्म का प्रवर्तन किया। उनके धर्म का प्रकाश देश और विदेश में दूर तक फैला। धरणेंद्र और पद्मावती देव-देवी उनके परम उपासक हैं। जैन धर्म में भगवान पार्श्वनाथ की पूजा संकट मोचन और विघ्न नाशन के लिए होती आई है। भगवान महावीर के शब्दो में वे पुरुषादानी अर्थात् वे पुरुषों में श्रेष्ठ थे ।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा - तीर्थंकर पार्श्व अप्रतिम चेतना के धनी थे। उनकी चेतना से निकले प्रकाश ने इस भूमंडल को प्रकाशित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। पार्श्व स्तुति गीत का संगान करते हुए कार्यक्रम का संचालन मुनि कुणाल कुमार जी ने किया। इस अवसर पर साउथ कोलकाता सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने स्वागत व आभार मंत्री कमल किशोर कोचर ने किया। अनेक भाई बहिनों ने तपस्या के प्रत्याख्यान किये। कार्यक्रम के प्रारंभ में भगवान पार्श्व का जप अनुष्ठान भी मुनिवृंद द्वारा करवाया गया। तेरह घंटे भगवान पार्श्व का जप आयोजित हुआ, जिसमें अनेक भाई बहिनों ने उत्साह के साथ जप किया।

सम्यक दर्शन कार्यशाला पारितोषिक वितरण

जयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एवं समण संस्कृति संकाय (जैन विश्व भारती) के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी ठाणा-6 के सान्निध्य में अणुविभा जयपुर केन्द्र में सम्यक दर्शन कार्यशाला पारितोषिक वितरण किया गया। साध्वी मधुलता जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन दर्शन के प्रति श्रावक-श्राविकाओं का ज्ञान भावी पीढ़ी के प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी संभागियों को तेयुप जयपुर की ओर से विगत 4 वर्षों के प्रशस्ति पत्र व पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अणुविभा जयपुर केन्द्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, अध्यक्ष गौतम बरड़िया, पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य सहित श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। तेयुप जयपुर के अध्यक्ष गौतम बरड़िया ने कार्यक्रम के प्रायोजक दौलतमल सिंघवी, जतन सिद्धराज भंडारी, प्रेम मेहता परिवारों के प्रति परिषद् परिवार की ओर से आभार ज्ञापित किया।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला

जयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी ठाणा-6 के सान्निध्य में अणुविभा जयपुर केन्द्र में 'भिक्षु विचार दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन किया गया। तेयुप जयपुर के उपाध्यक्ष प्रवीण जैन व कार्यसमिति सदस्य सौरभ जैन ने विजय गीत का संगान कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। साध्वी मधुलताजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का दर्शन एक अलौकिक दर्शन है। इस दर्शन ने धर्म का वास्तविक रूप समाज के सामने रखा, आचार्य भिक्षु ने कहा धर्म त्याग में है, भोग में नहीं, व्रत में है अव्रत में नहीं, असंयति की जीने की वांछा करना राग, मरने की वांछा करना द्वेष, संसार समुद्र से तरने की वांछा करना वीतराग देव का धर्म है। आचार्य भिक्षु ने लौकिक और लोकोत्तर दो भागों में अपना दर्शन प्रस्तुत किया। सावद्य दान और सावद्य दया मुक्ति का मार्ग नहीं है। शुद्ध साधन के द्वारा ही शुद्ध साध्य की प्राप्ति हो सकती है। हृदय परिवर्तन से ही अहिंसा का मार्ग प्रशस्त होता है।

साध्वी समितिप्रभाजी नेअपने वक्तव्य में आचार्य भिक्षु की अनुकम्पा को कुछ उदाहरणों से बताते हुये कहा कि आचार्य भिक्षु को सत्य क्रांति का पुरोधा कहा जा सकता है। समाज में जन-जागृति का प्रचार-प्रसार कर उन्होंने रूढ़िवादी प्रथाओं पर विराम लगाया। कार्यक्रम में अणुविभा जयपुर केन्द्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, तेयुप जयपुर के अध्यक्ष गौतम बरड़िया, संगठन मंत्री श्रीकांत बोरड़ सहित अनेकों श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

प्ले और प्लेटर कार्निवल कार्यक्रम का आयोजन

गंगाशहर। तेरापंथ कन्या मंडल गंगाशहर द्वारा 'प्ले एंड प्लेटर' कार्निवल का आयोजन किया गया, जिसमें शॉपिंग, गेम्स, फूड आदि का समावेश था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मजिस्ट्रेट भानु प्रिया जैन, इनफॉर्मेटिव असिस्टेंट चित्रा जैन व अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल सदस्य ममता रांका उपस्थित थे। कार्यक्रम का उद्घाटन मुनि सुमतिकुमार जी के मंगल पाठ के पश्चात अतिथि जनों द्वारा किया गया। साध्वी चरितार्थप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभाजी व अन्य साधु-साध्वियों का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। भानुप्रिया जैन ने कन्याओं के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि अपनी काबिलियत को पहचानने के लिए कन्या मंडल एक बहुत ही अच्छा प्लेटफॉर्म है। ममता रांका ने कहा कि कन्या मंडल को पहली बार इस प्रकार का बड़ा प्रोजेक्ट दिया गया है जिससे कन्याओं को लोगों के साथ डील करने का अनुभव हुआ। कार्निवल में शॉपिंग व फूड के लगभग 50 स्टॉल्स लगी और कन्याओं द्वारा गेम्स ज़ोन में खेल खिलाए गए। लगभग 3000 लोग सम्मिलित हुए।

मीट एंड ग्रीट कार्यक्रम का शानदार आयोजन

गुवाहाटी।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, गुवाहाटी ने स्थानीय राजमहल होटल में मीट एंड ग्रीट कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के ईस्ट जोन-1 के अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया थे। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम गुवाहाटी के अध्यक्ष पंकज कुमार भूरा ने पधारे हुए सभी सदस्यों एवं गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में टीपीएफ गुवाहाटी द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में सभी को जानकारी दी तथा मीट एंड ग्रीट कार्यक्रम के उद्देश्यों से सबको अवगत कराया। तत्पश्चात टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोज नाहटा ने टीपीएफ द्वारा होने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों जैसे शिक्षा सहयोग, स्वास्थ्य सेवा, आध्यात्मिकता, नेटवर्किंग आदि के बारे में जानकारी दी। टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कोटेचा ने बताया कि टीपीएफ से जुड़कर हम संघ के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह कर सकते हैं और साथ ही साथ अपना आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास भी कर सकते हैं। तत्पश्चात फोरम के राष्ट्रीय ट्रस्टी तारकेश्वर संचेती ने टीपीएफ से जुड़े अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम को आगे बढ़ते हुए कोलकाता से समागत ईस्ट जोन-1 के अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया ने टीपीएफ को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने के लिए सब के सहयोग एवं सहभागिता की अपेक्षा की। उन्होंने कहा कि सब के साथ से ही सबका विकास संभव है, इसीलिए इस बार टीपीएफ की टैगलाइन है 'इंवॉल्व यू मैटर' अर्थात टीपीएफ के विकास के लिए हर व्यक्ति विशेष का सहयोग महत्वपूर्ण है। सम्मान सत्र के दौरान गुवाहाटी के सभी पेट्रोन मेंबर्स एवं फेलो मेंबर्स का सम्मान किया गया। टीपीएफ गुवाहाटी के अंकेक्षक रवि अजीतसरिया, राजन गुप्ता एवं पूर्व अंकेक्षक विकास सुराणा का भी सम्मान किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम मे पधारे सभी सदस्यों ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया।

टीपीएफ सदस्य फेमिना कन्वेनर अंकिता लोढा ने रोचक खेल से कार्यक्रम में पधारे सभी सदस्यों का मनोरंजन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कमल कोठारी, राजेश बोथरा, पुखराज सेठिया, मुकेश पींचा, पवन लोढ़ा, अरिहंत गुलगुलिया आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन निवर्तमान अध्यक्ष संतोष पुगलिया ने किया।

रिद्धि मंत्र दिव्य महा अनुष्ठान का आयोजन

रायपुर।

जैन धर्म में भक्तामर स्तोत्र को महामंगलकारी, विघ्न-विनाशक और कष्टहारी माना जाता है। यह जीवन की अनेक जटिल समस्याओं के निवारण की क्षमता रखता है। दिव्य भक्तामर स्तोत्र आधारित रिद्धि मंत्र महा अनुष्ठान का आयोजन रायपुर स्थित तेरापंथ अमोलक भवन में किया गया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, रायपुर द्वारा, समणी निर्देशिका विपुल प्रज्ञा जी और समणी आदर्श प्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित इस अनुष्ठान में प्रत्येक पद्य को सचित्र प्रोजेक्टर के माध्यम से दिव्य मंत्रों के साथ समुच्चारित कराया गया।

समणी विपुलप्रज्ञा जी ने अनुष्ठान में उपस्थित आराधकों को बताया कि भक्तामर स्तोत्र की रचना जिन शासन की प्रभावना के उद्देश्य से आचार्य मानतुंगसूरी द्वारा की गई थी। भक्तामर स्तोत्र की महिमा और चमत्कार असीम और अपरंपार है।

भक्तामर स्तोत्र में कुल 48 पद्य हैं, उनमें से 4 पद्य अति प्रभावकारी माने गए हैं। इनका दुरुपयोग न हो, इस कारण वर्तमान समय में केवल 44 पद्यों का उल्लेख मिलता है और इन्हीं का संगान किया जाता है। समणी जी ने कहा कि यदि कोई साधक पूर्ण मनोभाव और श्रद्धा से भक्तामर स्तोत्र की स्तुति करता है, तो उसे इसके दिव्य प्रभाव का अनुभव अवश्य होता है। अनुष्ठान में विशेष रूप से उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में गौतम गोलछा, नवरतन डागा, नेहा जैन, वीरेंद्र डागा, मधुर बच्छावत, श्याम जिंदल और अभय गोलछा शामिल रहे।

पृष्ठ 11 का शेष

महाराष्ट्र राजभवन में...

राज्यपाल महोदय ने कहा - सामान्यतः लोग सोचते हैं- जैन धर्म नॉर्थ इण्डिया में ही है, किन्तु ऐसा नहीं है। जैन धर्म दक्षिण में बहुत था। दो तिहाई तमिल पूर्व में जैन थे, वहां दक्षिण में जैन धर्म का खूब प्रभाव है। राज्यपाल महोदय ने आगत प्रतिनिधि मंडल को कहा - आप जो यह अच्छा कार्य कर रहे हैं उसके लिए राजभवन से जो भी सहयोग चाहिए वह आपको प्राप्त होगा। हम से सब प्रकार के लोग मिलते हैं किन्तु आप साध्वियों से मिलने से आन्तरिक प्रसन्नता मिली। आप लोग जन कल्याण का कार्य करते रहें।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने राज्यपाल महोदय से बातचीत के दौरान आचार्य श्री महाश्रमण जी के अहमदाबाद चातुर्मास की अवगति दी एवं राज्यपाल महोदय को गुरुदेव के दर्शन की प्रेरणा दी। राज्यपाल महोदय ने इसके लिए अपनी अभिरुचि प्रकट की एवं अपने अधिकारियों से सम्पर्क करने का कहा। परमपूज्य गुरुदेव की कृपा से महाराष्ट्र राजभवन का कार्यक्रम अत्यन्त संघ प्रभावक एवं गरिमापूर्ण रहा।

कार्यक्रम के अन्त में साध्वी मंगलप्रज्ञाजी द्वारा अनुवादित तत्त्वार्थ सूत्र (प्रथम खण्ड) को किशनलाल डागलिया एवं राजकुमार चपलोत ने राज्यपाल को भेंट किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी एवं साध्वी अतुलयशा जी ने कार्यक्रम में सामयिक गीत का संगान किया। इस कार्यक्रम की आयोजना, संयोजन में मुंबई के राजकुमार चपलोत एवं मुंबई शहर विभाग के संघचालक रविन्द्र सिंघवी, राज्यपाल के जन संपर्क अधिकारी उमेश काशीकर का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

पृष्ठ 1 का शेष

समय को दें गले के...

आचार्यश्री ने जनता को संकल्प दिलवाते हुए त्याग का अभ्यास कराया और प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी करवाया। उपस्थित जनता ने त्रिपदी वंदना के साथ आचार्यश्री के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

मुख्य प्रवचन से पूर्व साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रबुद्ध व्यक्ति के लिए हर दिन नया होता है।

नववर्ष की शुरुआत नए संकल्पों के साथ करने से व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आ सकता है। हमारे जीवन की डायरी में तीन पन्ने होते हैं: जन्म, जीवन और मृत्यु। जन्म और मृत्यु हमारे हाथ में नहीं हैं, लेकिन जीवन हमारे हाथ में है। यदि जीवन सही दिशा में चलेगा तो व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है।

मुख्यमुनिश्री महावीर कुमार जी ने नववर्ष की शुभकामनाएं प्रदान करते हुए कहा कि कालचक्र अनंत काल से चल रहा है और चलता रहेगा। आत्मा का अस्तित्व भी अनंत काल से है। आत्मा को जन्म-मरण के चक्र से मुक्त कराने का प्रयास करें। जीवन में व्रतों की चेतना जगाएं और मानव जीवन को सफल बनाएं।

साध्वीवर्याजी श्री संबुद्धयशा जी ने कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी ने 'तेरापंथ प्रबोध' के अंत में लिखा था : ₹शुभ भविष्य है सामने।₹ आज भी सैकड़ों लोग शुभ भविष्य के लिए गुरु से प्रेरणा लेने उनके पास आए हैं। शुभ भविष्य का निर्माण शुभ संकल्पों से होता है। शुभ संकल्पों को अपनाने से आत्मा का कल्याण होता है।

मैं इस अवसर पर जैन विश्व भारती द्वारा नववर्ष के कैलेंडर का लोकार्पण किया गया। खान्देश सभा का कैलेंडर भी पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया गया। डोलिया जैन तीर्थ ट्रस्ट मंडल की ओर से अजयभाई शाह ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जीवन में सुविनीतता का...

व्यक्ति के पास भले ही कुछ ज्ञान हो, परंतु वह सर्वज्ञ नहीं होता। जो सर्वज्ञ होते हैं, वे कभी घमंड नहीं करते। उनमें संपूर्ण संसार का ज्ञान होता है, फिर भी वे विनम्र रहते हैं। तब ही केवलज्ञान प्राप्त होता है, जब घमंड और अहंकार का त्याग हो।

ज्ञान होने पर मौन रहना चाहिए और उसका प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। शक्ति होने पर भी क्षमाशीलता बनाए रखना चाहिए। जो त्याग और दान करता है, उसे नाम और प्रशंसा की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए।

हमें अपने जीवन में घमंड से बचने का हरसंभव प्रयास करना चाहिए। स्वामी विवेकानंद इंस्टिट्यूट के चेयरमेन मोहित कुमार और प्रिंसिपल नमिराज जैन ने आचार्यश्री के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

अवचेतन मन से संपर्क

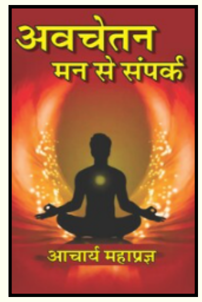

दीर्घश्वास का प्रयोग अपने व्यक्तित्व को पहचानने का प्रयोग है, अपने आपको पहचानने का प्रयोग हैं। श्वास एक माध्यम हैं दुसरों को पहचानने का और स्वयं को पहचानने का। हर व्यक्ति में परिवर्तन होते हैं, कुछ स्थूल और कुछ सूक्ष्म। परिवर्तन का चक्र निरंतर चलता रहता है

संकल्प में बहुत शक्ति होती है। जब संकल्प जागता है तो व्यक्ति जागता है, राष्ट्र जागता है। संकल्प कमजोर होता हें तो व्यक्ति कमजोर होता हे और राष्ट्र भी कमजोर और क्लीव हो जाता है।

भौतिकवादी दृष्टि के साथ अध्यात्मवादी दृष्टि भी बहुत आवश्यक है। अध्यात्म की दृष्टि का अर्थ है भीतर में झांकने की दृष्टि। जब दुष्टिकोण आध्यत्मिक बनता है तब आदमी बाहर ही नहीं देखता, भीतर देखने लग जाता हैं।

पदार्थ का भोग करना और पदार्थ के साथ ममत्व जोड़ना-वे दोनों भिन्न बातें है। ये दोनों एक नहीं है। आध्यात्मिक व्यक्तित्व में पदार्थ का उपभोग अवश्य होता है, पर ममत्व नहीं जुड़ता। उसमें 'पदार्थ' और 'मेरा' अलग रहते हैं, जुडने नहीं।

परमात्मा की अवस्था तब प्रकट होती है, जब स्वाध्याय और उनके बाद ध्यान की शुरूआत होती है। ध्यान करते-करते यह लगे कि अब ध्यान की स्थिति नहीं है तो स्वाध्याय शुरू कर दो।

संकल्प में बहुत शक्ति होती है। जब संकल्प जागता है तो व्यक्ति जागता है, राष्ट्र जागता है। संकल्प कमजोर होता हें तो व्यक्ति कमजोर होता हे और राष्ट्र भी कमजोर और क्लीव हो जाता है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

प्रभु पार्श्व जन्म कल्याणक पर सजोड़े अनुष्ठान संपन्न

गंगाशहर।

तेरापंथ युवक परिषद और तेरापंथ महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में प्रभु पार्श्व जन्म कल्याण पर नमिऊण पार्श्व प्रणति अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी, साध्वी प्रांजलप्रभा जी और सहवर्ती साध्वियों द्वारा आचार्य भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित प्रभावक एवं चमत्कारिक उवसग्गहरं स्तोत्र, बीज मंत्र एवं अन्य मत्रों का सामूहिक रूप से अनुष्ठान करवाया गया। साध्वी प्रांजल प्रभा जी ने कहा कि मंत्रों से आत्मविशुद्धि के साथ-साथ विघ्न-बाधाओं का निवारण भी होता है। साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि आज से प्रारंभ कर यदि 27 दिनों तक इस अनुष्ठान का क्रम जारी रहे तो यह महान रिद्धि सिद्धि प्रदाता होता है। कई भाई-बहनों के इस अनुष्ठान में तेले व उपवास की तपस्या भी रही।

इसमें लगभग 85 जोड़ों सहित 400 व्यक्तियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में स्वागत अभिनंदन तेरापंथ युवक परिषद् उपाध्यक्ष देवेंद्र डागा ने किया। आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने किया।

महाराष्ट्र राजभवन में गूंजा अणुव्रत व अणुव्रत अनुशास्ता का संदेश

मुंबई।

शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की शिष्या प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य एवं अणुविभा के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मंडल महाराष्ट्र राजभवन के प्रांगण में पहुंचा। राजभवन के कान्फ्रेंस हॉल में राज्यपाल सी. पी. राधाकृष्णन की गरिमामयी उपस्थिति में अणुव्रत के संदर्भ में एक विशेष संगोष्ठी आयोजित हुई। प्रबुद्धजनों के मध्य लगभग एक घण्टे यह विशिष्ट कार्यक्रम हुआ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। अणुविभा संस्था परिचय महामंत्री मनोज सिंघवी ने दिया एवं स्वागत मुम्बई सभा अध्यक्ष माणक धींग ने किया।

समाज के विशिष्ट व्यक्तियों ने राज्यपाल महोदय का अभिनंदन किया। किशनलाल डागलिया पूर्व अध्यक्ष महासभा, विनोद कोठारी उपाध्यक्ष अणुविभा, कुन्दन धाकड अध्यक्ष महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउण्डेशन, गणपत डागलिया कार्याध्यक्ष, नीतेश धाकड उपाध्यक्ष, आदि ने साहित्य, शाल्यार्पण आदि से राज्यपाल महोदय का सम्मान किया। इस स्वागत कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य राजकुमार चपलोत ने किया। इस अवसर पर अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, महामंत्री मनोज सिंघवी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य राजकुमार चपलोत ने अणुव्रत कैलेंडर 2025 का राज्यपाल सी पी राधकृष्णन को भेंट किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने मुख्य कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए साध्वी प्रो. मंगलप्रज्ञाजी का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्य कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने अपने वक्तव्य में गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन की अवगति देते हुए प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र बाबू, डॉ. राधाकृष्णन आदि अनेक राजनेताओं के अणुव्रत से संबन्धों को रेखांकित करते हुए गुरुदेव श्री तुलसी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एवं पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा साथ में लिखित 'फेमिली एवं नेशन' पुस्तक की जानकारी दी। वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के द्वारा कृत अहिंसा यात्रा तथा अणुव्रत के कार्य की अवगति दी। गुरुदेव के दिशा निर्देशन में संचालित अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स एलिवेट आदि आयामों की अवगति विस्तार से दी। जैन संत चर्या की विशद जानकारी साध्वीश्री द्वारा प्राप्त कर राज्यपाल महोदय अत्यधिक प्रसन्न हुए। साध्वी चैतन्य प्रभा जी ने एलिवेट कार्यक्रम की एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने डिजिटल डिटॉक्स की जानकारी दी।

राज्यपाल महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा- आप लोग मानवता के लिए खूब अच्छा कार्य कर रहे हैं। इसकी मुझे प्रसन्नता है। जैन कम्यूनिटी शान्तिप्रिय है। अपने द्वारा किसी को दुखी नहीं करना, यह इस कम्यूनिटी की विशेषता है।

(शेष पेज 10 पर)

सीपीएस दीक्षांत समारोह का आयोजन

गाँधीनगर, दिल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेयुप गांधीनगर दिल्ली द्वारा आयोजित कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक मंत्रोच्चार से हुयी। तत्पश्चात तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन युवक रत्न दिल्ली सभा किया, जिनके अर्थ सहयोग से कार्यशाला सफल हुई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुखराज सेठिया ने सहभागियों को प्राप्त प्रशिक्षण को जीवन में आत्मसात करने हेतु अभ्यास करने की महत्ता बताई। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि बोथरा फाउंडेशन ट्रस्ट के चेयरमैन शुभकरण बोथरा ने भी कार्यशाला की सराहना की। सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने सहभागियों को आगे बढ़कर सीपीएस जोनल राउंड में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया। शाखा प्रभारी अंकुर लुणिया ने अपने विचार व्यक्त किए और साथ ही

अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। नवगठित तेयुप गांधीनगर दिल्ली को पहली बार सफल सीपीएस आयोजित करने की बधाई देते हुए प्रतिभागियों को बोलने की कला में पारंगत होने के लिए लगातार पब्लिक स्पीकिंग करते रहने का आह्वान किया। तेयुप अध्यक्ष अशोक सिंघी ने सबका स्वागत व अभिनंदन किया व अहमदाबाद, सूरत, राजाजीनगर से समागत प्रशिक्षक और प्रशिक्षिकाओं के श्रम की सराहना की। सभी प्रायोजकों के प्रति साधुवाद संप्रेषित नवगठित परिषद् द्वारा कृत कार्यों से अवगत करवाया। सप्त दिवसीय सीपीएस कार्यशाला के संभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां दी। प्रस्तुतियों के आधार पर संभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर अभातेयुप से प्रवृति सलाहकार जतन श्यामसुखा, राजेश जैन, अभातेयुप सदस्यों के साथ विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति रही। संयोजक तनुज लुणिया व किशोर मंडल कार्यकर्त्ता रोशन मालू का विशेष श्रम रहा। तेयुप गांधीनगर दिल्ली मंत्री प्रकाश सुराणा ने सबका आभार व्यक्त किया।

दो दिवसीय तेरापंथ टास्क फोर्स कार्यशाला आयोजित

उदयपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् उदयपुर द्वारा दो दिवसीय मेवाड़-मारवाड़ स्तरीय तेरापंथ टास्क फोर्स कार्यशाला का आयोजन उदयपुर के महाप्रज्ञ विहार भुवाणा में किया गया। बाढ़, भूकंप, चक्रवात, भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान बचाव और राहत कार्यों में अहम भूमिका निभाने वाली भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) द्वारा आपदा प्रबंधन, स्वयं व आसपास के लोगों की सुरक्षा उपायों का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में उदयपुर एवं नजदीकी परिषदों के प्रतिभागियों ने भाग लेकर देश और समाज सेवा के लिए आपदाओं से बचाव एवं जीवन रक्षा व दूसरों की सहायता संबंधित जानकारी प्राप्त की।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा विशेष रूप से उदयपुर पधारे। उन्होंने अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित होने वाले सभी आयामों के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला में मुख्य अतिथि मेवाड़ राजघराने के युवराज डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ व विशिष्ट अतिथि अभातेयुप सहमंत्री लक्की कोठारी और हैदराबाद से टीटीएफ के राष्ट्रीय प्रभारी मनीष पटावरी, टीटीएफ राज्य प्रभारी कुलदीप मारू, शाखा प्रभारी देव चावत की गरिमामयी उपस्थिति रही। अभातेयुप सदस्यों एवं परिषद् पदाधिकारियों की भी उपस्थिति रही। जैन संस्कार विधि के प्रभारी सुनील मुणोत की उपस्थिति में संस्कारक पंकज भंडारी एवं मनोज लोढ़ा द्वारा विभिन्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। युवराज डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने तेयुप के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष में 51गौरवशाली वर्षों के इतिहास को सबके स्मृति पटल पर लाने हेतु कैलेंडर का विमोचन किया। उन्होंने एनडीआरफ और एसडीआरएफ टीम का सम्मान करते हुए कहा कि अगर आपदा के समय बचाने के लिए भगवान को याद करते हैं तो उस रूप में यही सामने आते हैं इसलिए इनका सम्मान करना बड़े ही गौरव की बात है। जैन संस्कार विधि से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में भीलवाड़ा, भीम, करेडा, आसींद, आमेट, रेलमगरा, उदयपुर, देवगढ़ आदि परिषदों से युवा साथी उदयपुर पधारे व प्रशिक्षण प्राप्त कर अंत में हुई परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सर्टिफिकेट प्राप्त किया। तेयुप उदयपुर अध्यक्ष भूपेश खमेसरा ने सभी का स्वागत-अभिनंदन करते हुए प्रतिभागियों को इस कार्यशाला में ज्यादा से ज्यादा सीखने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री साजन मांडोत ने तथा आभार विनीत फुलफगर एवं संजय सिंघवी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
13 जनवरी - 19 जनवरी, 2025

धर्म की साधना है मानव जीवन की सफलता : आचार्य श्री महाश्रमण | हम सब एक हैं, नेक हैं और साथ हैं : आचार्य श्री भावचंद्र

लीमड़ी अजरामर संप्रदाय द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण को 'पुण्य सम्राट' अलंकरण

लीमड़ी।
28 दिसम्बर, 2024

लीमड़ी प्रवास के दौरान युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का श्री अजरामर गुरु गादी तीर्थधाम में आगमन हुआ। इस अवसर पर अजरामर संप्रदाय के गच्छाधिपति आचार्यश्री भावचन्द्रजी के साथ उनका आध्यात्मिक संवाद हुआ।

आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपने प्रवचन में कहा, 'धर्म से बड़ा दूसरा कोई मंगल नहीं। अहिंसा, संयम और तप ही धर्म हैं। जो व्यक्ति धर्म में मन लगाकर साधना करता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। मानव जीवन की सबसे बड़ी सफलता धर्म की साधना में निहित है।''

उन्होंने जैन परंपराओं में विद्यमान विविधताओं और समानताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अजरामर संप्रदाय और तेरापंथ परंपरा में मुखवस्त्रिका, अमूर्तिपूजा और बत्तीस आगमों की समान मान्यताएं हैं। पूज्य प्रवर ने तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु के जीवन, तेरापंथ के नामकरण और जैन शासन की अन्य ऐतिहासिक घटनाओं की चर्चा की।

आचार्यश्री भावचन्द्रजी ने कहा, 'आज का दिन पवित्र और श्रेष्ठ है। तेरापंथ समाज और अजरामर संप्रदाय के बीच गहरा संबंध है। तेरापंथ के आचार्यों, साधु-साध्वियों, और श्रावकों से मिलने और उनके साहित्य को पढ़ने का अवसर प्राप्त होता रहता है। आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का साहित्यिक योगदान अतुलनीय है। तेरापंथ साधु-साध्वियों का पूरे भारत, नेपाल, और भूटान में विचरण जैन धर्म की व्यापक सेवा को दर्शाता है।'

उन्होंने आगे कहा, 'हम सब एक हैं, नेक हैं और साथ हैं। उपकरण भले ही अलग-अलग हों, लेकिन यदि अंतःकरण शुद्ध हो, तो यह भेदभाव भी सौंदर्य में बदल जाता है।'

आचार्यश्री भावचन्द्रजी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी को 'पुण्य सम्राट' के अलंकरण से सम्मानित करने की घोषणा की। लेकिन अलंकरण और विशेषणों से स्वयं को दूर रखने वाले आचार्य श्री महाश्रमण जी ने इसे विनम्रता से अस्वीकार करते हुए अजरामर संप्रदाय के वात्सल्य को स्वीकार किया। यह आध्यात्मिक मिलन परस्पर सद्भावना और एकता का संदेश लेकर आया।

इस अवसर पर दोनों आचार्यों ने धर्म, साहित्य, इतिहास और जैन शासन के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया। सभा में मुख्यमुनि श्रीमहावीरकुमार जी, विवेक मुनि जी महाराज और वरिष्ठ श्रावक भरत भाई ने भी अपने विचार रखे।

यह ऐतिहासिक मिलन न केवल जैन समाज के लिए प्रेरणादायक था, बल्कि आध्यात्मिक एकता और समरसता को भी नई ऊंचाई पर ले गया।

प्रियता और अप्रियता के संवेदन से ऊपर उठने का करें अभ्यास : आचार्यश्री महाश्रमण

सायला।
31 दिसम्बर, 2024

सन् 2024 का अंतिम दिन, 31 दिसंबर। तेरापंथ के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ बारह किलोमीटर का विहार कर सायला में स्थित श्री राज सोभाग आश्रम में पधारे।

महासाधक ने साधना के सूत्रों की व्याख्या करते हुए फरमाया कि आगम साहित्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आगम के स्वाध्याय से आध्यात्मिक पथदर्शन, तत्व बोध और जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है। आगमों में एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'उत्तराध्ययन' है, जिसमें 36 अध्ययन हैं। इस आगम में एक ओर तत्व ज्ञान की बातें मिलती हैं तो दूसरी ओर आध्यात्मिक साधना के निर्देश। कथानकों और घटनाओं के माध्यम से गहरी बातें समझाई गई हैं।

साधु को परिषह सहने वाला, विनय का शिक्षण देने वाला, बहुश्रुत की महिमा को मंडित करने वाला और ब्रह्मसाधना का परिचायक बताया गया है। इस आगम के 32वें अध्ययन में एक श्लोक आता हैः

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं,
कम्मं च मोहप्पभवं वयंति।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं,
दुक्खं च जाईमरणं वयंति॥

इस श्लोक का अर्थ बताते हुए आचार्यश्री ने कहा कि हमारी चेतना में राग और द्वेष के भाव अनादि काल से परिणत हो रहे हैं। अनगिनत जन्मों से आत्मा इन भावों के कारण जन्म-मरण के चक्र में बंधी हुई है। राग-द्वेष कर्म के बीज हैं, और मोहनीय कर्म इनमें सबसे मुख्य है। पाप कर्मों के पीछे मोहनीय कर्म की ही भूमिका होती है, जो आत्मा में विकृति उत्पन्न करता है। हम विकृति से प्रवृत्ति की ओर आएं और राग-द्वेष से मुक्त होकर स्वभाव में स्थित हों। प्रियता और अप्रियता के संवेदन से ऊपर उठने का अभ्यास करें।

अहिंसा, संयम और तप धर्म के उत्कृष्ट मंगल हैं। पाँच महाव्रत, पाँच समितियां और तीन गुप्तियां साधना की महान संपदाएं हैं। त्याग से व्यक्ति महान बनता है। सन्यास सबसे बड़ा हीरा है। व्रतों को स्वाध्याय और ध्यान के माध्यम से सुदृढ़ और पुष्ट किया जा सकता है। आगम और अच्छे ग्रंथों के अध्ययन से संयम रूपी वृक्ष को पोषण मिलता है।

राग-द्वेष साधना के बाधक तत्व हैं। सम्यक्त्व का जीवन में विशेष महत्त्व है। सम्यक्त्व के समान कोई बड़ा रत्न, मित्र, भाई या लाभ नहीं है। हमारे जीवन का दृष्टिकोण आध्यात्मिक बनना चाहिए। विनम्रता और अनाग्रह का भाव रखना चाहिए। जहां से भी सच्ची और कल्याणकारी बात मिले, उसे ग्रहण करना चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा कि हम आज श्रीमद् राजचंद्र से जुड़े एक महत्त्वपूर्ण स्थान में हैं, जहां अध्यात्म की साधना सतत चलती है। आश्रम के संचालक विक्रम शाह एवं साधक नलीन कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।